हरगीती छन्द ॥

अस हूरिगो मुनि मण्डलीमहं निरखि देव कमण्डली। सब शास्त्र वेदपुराण वपुधर लसहिं शित सुखद्युति भली ॥ संसार जा खिलवार में यह होतसह सब लोक कै ॥ सोइ लसत कमलासीन दरशत थोक भागे शोक कै ॥ ५९४ ॥ भृगु अत्रि पुलह प्रचेत दक्ष मरीचि नारद अंगिरा। गोतम वशिष्ठकुमार कर्दम विधिहि सेवहिं सहगिरा ॥ महिवारि तेज समीर नभ मन प्रकृति विद्या राजहीं। संकल्प प्राण विकार क्रतु सब जगत कारण छाजहीं ॥ ५९५ ॥ रस शब्द गंध स्वरूप अरु अस्पर्श तहं मूरति धरे। धर्मार्थ काम विगार मेल सुभाव सब सन्मुखखरे ॥ रवि इंदु कुज बुधजीव भृगु शनि राहु केतु बिराजहीं। वाणी सकल विधि नारि विशुकरमा परम छवि छाजहीं ५९६ ॥ क्रम पद जटा घन संहिता श्रुति अंग सब तहं राजते। क्षण लव मुहूरत दिवस निशि पख मास ऋतुवरभ्राजते ॥ तिथि वार योग नक्षत्र संवत सबहिं लै लै नामकों। परिणाम को करते भए सुख मिलन हित पर नामकों ॥ सुत सहित लखि कश्यपहिं तहं सुख चारि हृदय विचारि कै। कहते भये वाणी महत आनंद गहत निरधारि कै ॥ ५९८ ॥

दो० हम जाना जिहि हेतु तुम आये मेरे पास।
कहतअहौं तुमसों अहो सुनहु सत्यइतिहास ५९९ ॥

चौपाई

जो अजेय अच्युत अज ईश। कर्त्ता हर्त्ता प्रभु जगदीश ॥ शंकरअरुहमतें परजोइ। बलिदानव कहंजीतैसोइ ६०० ॥ सबको आदि अनादि अनन्त। जा कहं भजहिं सकल भगवन्त ॥ हम सब नहिं जानहिं विभु लीला। सो हम कहं जानहिं गुण शीला ६०१ ॥ क्षीर सिन्धु के उत्तर जाऊ। करहु तहांतप उर भरिचाऊ ॥ जबप्रसन्न ह्वैहैं भगवान। तब तुम नहिं सुनिहौ निज कान ६०२ ॥ गिरां सनातन मंगलखानी। ब्रह्ममई परब्रह्मवखानी ॥ सुखमों भरी सकल

दुख हरणी । करुणा करणि कृपा निधि बरणी ६०३ ॥
दो० बरमति तब तुम सब तहां बर मांगहु भय छोड़ु ।
तुमप्रभु हमरेबन्धु अब होउ हरउ दुखद्रोहु ६०४ ॥
बसन्ततिलका छन्द ॥
पीयूष पुत्र वचनै सुनि देव भारे । चाले प्रणाम करिकै उर मोद धारे ॥ लीने पिता जननि सों मति प्रीति रङ्गी । भीने महा हरष सों सुर राज संगी ६०५ ॥ नाना पहार सर सिंधु जोहैं । राहैंमले चलत कश्यप पतसोहैं ॥ छीरोद उत्तरगये तबप्रेमपूरे । पीयूष धानमधि मैंसब देवरूरे ६०६ ॥ अट्ठाइई जनकनैसुत बोलि ऐसे । हज्जार संवत रह्यो तुम दर्भ वैसे ॥ मौंनोतपी हरि पदांबुज ध्यान धारो । जोचित्त है सकल कारज होइ भारो ६०७ ॥ लागे तवै परमतेज स्वरूप धारे । गोबिन्द चंद भगवन्त अनन्त प्यारे ॥ आनन्द कन्द नन्द नन्दहि जौन ध्यावै । संसार मध्य मन बांछित तौन पावै ६०८ ॥
दो० तव कश्यप करजोरिकै करिकै बिबिधि प्रणाम ।
हरि स्तुति करिबे लगे बिद्या बुधि गुणधाम ६०९ ॥
शार्दूलबिक्रीड़ित ।
राधाराधित बिग्रहं रसगृहं राधागृहस्थं प्रभुं । नागेशार्चितमादिनागशयनं नाकेशकेशंबिभुं ॥ देवीनाथविनाथना थबिगतंबिश्वकृपासागरं इन्दाइन्दगतंनमामितमजंनन्दात्मजंनागरं ६१० ॥
मालिनी ॥
मधु विपिन बिहारी । पद्म हृत्पद्म हारी ॥ सुख मय भय हारी । दुष्ट गर्व प्रहारी ॥ अघमय जनतारी । चारु कल्याणकारी ॥ सकलहृदयचारी । पातुनश्चक्रधारी ६११ ॥
मनोरमा छन्द ॥
कमला भृद पूर्वसुरा जहरार्चित । नरपश्चिम कालगति प्रदभान्वित ॥ रतिभृत्पित कत्तर सारथि बंदित । करुणांकुर सज्जन दक्षिण माथित ६१२ ॥

आर्या ॥

विजय धनंजयविजय दहेडे हेरंबार्च्च वल्लभात: । कुरुकरुणा मरिमर्द्दन यशोदानंद यशोदात: ६१३ ॥

शिखरिणी ॥

असारे संसारे खलुकलुष सारेसुरपते । विकारे भाकारे निखिल सुखहारे वरमते ॥ विपत्भ्यो स्वामिस्तव चरणभक्तिर्शितरणि: । प्रसीदप्राणेशत्वमसिभवनीहारतरणि: ६१४॥

वसुकला ॥

वसु वसुकलार्क । नयनामलार्क ॥ कमिष्टदभिराम । मांरच राम ६१५ ॥

चतुष्कला ॥

नतभव । केशव ॥ माधव । मासव ६१६ ॥

अनुष्टप् ॥

वासुदेवाय देवाया निरुद्धायाघ हारिणे । अभिरामाय रामायनम: पंचेषुधारिणे ६१७ ॥

वसंततिलका ॥

आनंदविग्रह धराय धराधराय।गोलोक नित्यनिलयाय लयास्पदाय ॥ सर्वेश्वराय विधिशर्व्व विपूजिताय । तस्मै-नम: सकल मंगल मंगलाय ६१८ ॥

दे।० तमोध्वमोद्भट दनुज दर य मोपमोन्नत काय ।

रमोत्तमोरसि नाकिने नमोऽज मोदकराय ६१९ ॥

सो० वृन्दारक वृन्देश मंदस्मित मंदारधर ।

कुरुकरुणां कुरुजेश शुरुसुखकर करुणांबुधे ६२० ॥

चौपाई ॥

वासुदेव वसुदेवा नंदन । देव देव राधा रति चन्दन ॥ रमा रमण राजीव विलोचन । भय मज मोचय गज भय मोचन ६२१ ॥

बरवै ॥

आनन्दक नंदक धरनंद कुमार । कुरु करुणा मरुणांघ्रे करुणागार ६२२ ॥

तोमर॥

कमला लयालयगाय। कमला लयायलयाय॥ करुणा कराय शुभाय। हरयेनमः सुखदाय ६२३॥

गुरुतोमर॥

मतिमंत संतक वंदितं। भगवंत संतर नंदितं॥ धुमिमंतमंत गतिप्रदं। पुरुषंभजे पुरुषार्थदं ६२४॥

मौक्तिकदाम॥

क्षमावर मावर माधर रूप। विभाधर भाधर भाकर भूप॥ विनायक नायक गायक इष्ट। प्रसीद विनायकपूजित शिष्ट ६२५॥

भुजंगप्रयात।

दयासागरं नागरं नागरुस्थं। सुकंजस्थितं कंज जन्मेश कंस्थं॥ यशोदेश पुत्रंयशो देयपेशं। भजे गोकुलेशं सदागोकुलेशं ६२६॥

लक्ष्मीधर॥

रामरमापते मापते क्ष्मापते॥ पद्मकोशस्थ पद्मास्यपद्मायते। ईश वृन्दारका धीश वृन्दापते॥ पाहिनंद प्रिया नंदनंदायते ६२७॥

तोटक॥

परमावर मावर विश्वपते। विधि शंकर शंकर दिव्यमते॥ जलभूधरभूधरदेवरते। करुणांप्रकुरुत्व मनन्यगते६२८॥

मोटक॥

गोपीवर पीवर पुष्यते। श्यामाधव माधव सुन्नमते॥ दीनेश दिनेश मनुष्यहरे। श्रीनाथ दयांकुरु देवहरे ६२९॥

अडिल्ल॥

अर्कप्रभशशिवदन कुजान्तक बुधगते। विश्वगुरो भार्गव स्वरूप रसमयमते॥ मन्दस्मित धर राहु शिरोहर वरध्वते। इषभ केतु विधिवंद्य दयांकुरु कुरुपते ६३०॥

चंचला॥

चंचलाप चंचलाक्ष चंचलाभ चर्चिताय। नीरदाभ पद्मनाभ लोक कोटि लाभदाय॥ विश्वरूप विश्व भूप विश्व कूपतारकाय। माधवायतेनमोरमाधवायमाधवाय ६३१॥

मल्लिका ॥

शोक द्वन्द खण्डनाय । धेनु लोक मण्डनाय ॥ भक्तताप चन्दनाय । तेनमोऽस्मि नन्दनाय ६३२

प्रमाणिका ॥

नगेशगेशमच्युतं । खगेशगेशमद्भुतं ॥ अगेशगेशवंदितं । भजे ब्रजेश नंदितं ६३३ ॥

समानिका ॥

लोक मोद कारिणे । कोटि शोक हारिणे ॥ इन्दिरा बिहारिणे । तेनमोऽब्ज धारिणे ६३४ ॥

छप्पय ॥

श्यामनीरद श्यामलाभ तामरश लोचन । श्यामारमण रमेशमेशपरमेश बिरोचन ॥ कृष्णांबर कृष्णांग कृष्ण कृष्णा-र्चित सुन्दर। कृष्ण कृष्ण भयहरण कृष्ण गुण कृष्ण भयहर ॥ जन दुःख बनानल कमल कर कमलावर कमलाक्षधर । कुरु करुणा मरुणानुजबिभो बरुणार्चिततरुणाघहर ६३५ ॥

सवैया ॥

हे जलजा लतिका मधुमाधव पातकपुञ्ज बनानल हे नव । दानवताप बिनाशन नीरद हे कमलांबक हे कमलाधव ॥ हे गिरिधारण पाप निवारण बारण तारण रूपमनोभव । हे भवकारण हे भवधारण हे भवबारण माधवमानव ६३६ ॥

चरणा दोहा ॥

प्रबल हय ग्रीव ग्रीवाहर परमपुण्य पीनाय । पापतमो हर्चै सुख कर्चै नमोदिव्य श्रीनाय ६३७ ॥

त्रिभंगी ॥

धरणी धर धीधर धरणीवर बरकरि रणीवरबर रूपि बिभो । सित शूकर बपु धर मखमय सुन्दरभय हरदरकर पर प्रभो ॥ सुरबर दितिजार्दनदेव जनार्दन भक्त मयार्दन भूमि पते । कुरु कृपा मयार्दन जन शोकार्दन खल लोका-र्दन दिव्यमते ६३८ ॥　चामर ॥

उद्भटंरणोत्कटं महासटं द्दढञ्जटं । कोपपीनदीन दुःख

हारि चंचलापटं ॥ दैत्यनाथ नाशनं रविप्रभं प्रकाशनं। श्री नृसिंहमीश्वरं भजे विनायकाशनं ६३९ ॥

पञ्झभली छन्द ॥

गुण मन्दिर मन्दर गिरिधराय। सुन्दरतर कच्छप विग्रहाय ॥ मणि भूषिताय कमलावराय। हरये नमोघहरदूर कराय ६४० ॥ नरेश छन्द ॥

बलि बन्दित निर्जरनन्दितं। द्विजरूपमजं खजनार्थितं ॥ सुरपानुज पण्डित पावनं। प्रणमामि रमावरवामनं ६४१ ॥

कोकिल छन्द ॥

दशशत बाहु बाहु हर भार्गव विप्रपते। सुर सुरभी प्रिये शरनभमखडन दिव्यमते ॥ यदुकुल नाशहेतु भटकेतु सुयुद्धरते। कठिन कुठार हस्तकरुणां कुरुविश्वगते ६४२ ॥

इन्दिरा छन्द ॥

वरधनुर्द्धरंवर्यसागरं। गुरुगुणाकरं केशवंपरं ॥ अरि शिरोहरंराघवंवरं। जनका जावरंनौमि सुन्दरं ॥ ६४३ ॥

भुजंग छंद ॥

हलाकर्षणं शुद्ध संकर्षणं कादम्बरी धारिणं लरिणं धैयवंतं। सदासीरहस्तं महावीर शस्तं कपोशांतकं शांतकं सांतकंतं ॥ प्रखंशांत कष्वेनु कारिंभजे धेनु वृन्दानुगं वेणुपाणिंशुभांगं। भुजंगार्चितं व्योमगंगानिभं मुक्तसंगामलंतंभुजंग प्रभांगं ॥ ६४३ ॥

रोला छंद ॥

सदाहिंसा धर्मतत्परतत्पराय पराय। अमरपूजितचरण पंकज पंकजा सुखदाय ॥ शास्त्र सम्मत सम्मताय शुभायसंशुद्धाय। बुधविपूजित पूजिताय नमोस्तु ते बुद्धाय ६४५ ॥

हरिगीती छंद ॥

यवनांतकाय भयांतकाय धरात्तपत्तन चारिणे। कलिकाल्मषारि सुरार ये द्विज नंद नंदक धारिणे ॥ भववंदिताय सदा सदाय हनंदिताश्व विहारिणे। प्रणतोऽस्मि तस्मैकल्किने किल कामिने कलि हारिणे ॥ ६४६ ॥

कवित्त ॥

वेदमंदरोद्ध रक्षितोयो मीनकूर्मरूपी यमाश्रित्य यमाश्रिता वादि दितिजौरणे। बलि र्बिलं नीतो येन गिरिधर दास सर्व्वै हैहय दशास्य वधयशो भुइभुइरुणे ॥ यश्चाद्वेतु कोम मार यइायस्या हिंसायाम धर्मेनाश मेश्यति प्रभुते यश्मिन् चमागणे। हे दशावतार रूपकृष्ण गोपभूप सुत कुरुकरुणा मनूप रत्नमांप्रति चणे ॥ ६४७ ॥

अमृत ध्वनि ॥

ऋत्य सुखद सुखमा सदन सुरवर सुन्दर हाम। पातक हारो पातुत ह्वैवो गिरिधर दास ॥ मुत्ततपो इत्तत्तत्य गतत्तत्तकीं। ब्तत्तठजल ब्तत्तत्त ब्दद सत्तत्तकीं ॥ ह्त्तत्तत्त्वि ब्तत्तत्त्त महत्तत्तन जित्। यत्ततरल कुब्तत्तत्तरणि ई त्तत्तरुब्त् ॥ ६४८ ॥

नाराच छंद ॥

पठंतिये नराःशुभा शुभंभु विप्रभोस्तवं। मुनीन्द्रनिर्तरैः कृत रमापति प्रियंनवं ॥ समस्त सिद्धदायकं प्रशस्तमद्भुतं वरं। लभंतितेहरेः पदंपरंपदंमनोहरं ॥ ६४९ ॥

दो० सुनि मुनिकी अरु सुरनकी अस्तुति अंबुज नैन।
भए सुनावत व्योमतें बासुदेव बरबैन ॥ ६५० ॥

चौपाई ॥

मैं प्रसन्न बर मांगहु भाई। तबहिं कहत मुनि शीस नवाई ॥ हे जगदीश दीन दुख हारी। जौंवर देत देव हितकारी ६५१ ॥ तौ प्रभु होहु सुरनके भाता। करहु श्रेय सबको जग चाता ॥ तबहिं अदिति अति प्रमुदित गात। मम सुत होहु कहो यह बात ६५२ ॥ सुरसिगरे तब बन्दत चरणहिं। कहते भए प्रणत दुख हरणहिं ॥ हे भगवानहरहु भयभारी। बंधुहोइ सुखदेहु सुरारी ६५३ ॥ सुनिइमि सबकी बाणोज्ञानी। बहुरौंबोले शारंग पानी ॥ एवमस्तु कारिभाता नाता। राजतुम्हैंदेहौं सुरचांता ६५४ ॥

दो० अपने अपने थान को जाहु देव मति मान।

मैंधरिहौं जिन रूपकाहं जानऊवचन प्रमान ६५५ ॥

आर्या ॥

सुनि हरिके इमि वचनै भारे देवता सबै हरषे । आए आए निज निज घरको पूरे प्रेम दुख आकरषे ॥ ६५६ ॥

सो० कश्यपसों सुरमात अदिति गर्भ धारत भई ।
सुरउरहरष न मातहरिअस्तुति बऊविधिठई ६५७ ॥

चौपाई ॥

संवतसहस गर्भ कहं धारो । भरोतेजतें आश्रमसारो ॥ भादोंशुक्ल द्वादशी आई । श्रवण नक्षत्रसुखद सुहाई ६५८ ॥ तहं मध्यान्ह समयजग पावन । प्रगटे दुःख दुरावन बावन ॥ हरिजनमे तेहिक्षण सुरजनमें । भयो अनंद प्रगट अरु मनमें ६५९ ॥ ब्रह्मा शंकरादि सुर भारी । अमित भांति अस्तुति विस्तारी ॥ ऋषि अरु पितर यक्ष गन्धर्व । सहित अप्सरा आए सर्व ६६० ॥ भरद्वाज कश्यप यमदग्नि । विश्वामित्र अधि सम अग्नि ॥ गौतम पुलह पुलस्त्य मरीचि । दक्ष अंगिरा अरु दधीचि ६६१ ॥ दत्त च्यवन औरव कपि बान । अकपि बान अत्रि विश्व सुजान ॥ तंब हिरण्य रोम अति नामा । वेद सिरा अतिविश्व सुधामा ६६२ ॥ विरजसहिसु गर्ग पर्जन्य । सत्य नेच पृथु भक्त अनन्य ॥ बामन जन्यअग्र तुर बाऊ । सुमनि पदधु आविभरिचाऊ ६६३ ॥ पुनि पुनि प्रमुदित बंदत चरन । लागे हरिकी अस्तुति करन ॥ भयो महा मंगल तेहिकाल । प्रभुकेजनमे जगत निहाल ६६४ ॥

दो० व्योम भीर भारी भई दिखियत यानहिं यान ।
सकल अप्सरा गंधरव गावहिं सुन्दरतान ॥ ६६५ ॥

छप्पय ॥

सुर्यवर्च शशि बर्बच रथ काल गोमायू । जुगप त्वनय पर्जन्यहहाऊह अरुउर्नायू ॥ चित्रसिरा अरुहंस अनघ गुण गान विशारद । आए तुंबरु सहित लिए गधर्बन नारद ॥ ए सकल परम प्रमुदित तकलअमल पूजि प्रभु पद कमल ॥ कलगान चारु करिबे लगेपगे प्रेम पुट कर जमल ॥ ६६६ ॥

शुभा पुंज कमला मेनका अरु सहजन्या। काम्यमार दूगो लक्ष्मणा रंभा धन्या॥ मनोरमा उर्वशी अद्रिका विद्युतपरना॥ ललिता परमाथिनी अनूका कंचन बरना। सुरबार नारि सुर तालसों चरविमान रसराचतीं॥ तिहिकाल निहाल निहारि हरि भई नाकथल नांचतीं ६६७॥ मित्र अर्य्यमा वरुण अंसभगपूषाधाता॥ विवस्वान मतिमान सुत्वष्टासविता त्राता॥ विष्णु सूरये सकल लसे रसरसे प्रणत तित। सर्प निरित म्रग व्याधअजै कपाद अपराजित॥ अरु हवन कपाली थानु भव अहिर्बुध उरअतिहि बहि। ए सर्व सर्व सोइ तहांवदत सर्व सुराधिपहि ६६८॥ विश्वदेवा साध्य मरुत वसु अश्विनि नंदन। गरुड़ अरुण पुनि सर्पसकल पूरे आनन्दन॥ और अनेकन परम धरणिके कारण जेते। रूप धरे गुणभरे खरे करजोरेतेते॥ जय जय शुभ श्री आनन्द-घन घनश्यामल भलवपुधरै। वर क्रपाकरक्क सब दुख हरक्क दीन बंधु सबतें परे ६६९॥

दो० हाथजोरि बोलतभये चारिवदन गुणधाम।
व्यापक पनतें विष्णु यह तुमरोनाम ललाम ६७०॥

शार्दूलविक्रीड़ित॥

जाके बीच समस्त विश्व बिलसै जो विश्व स्वामी अहै। जाकोनामऊं विश्ववेद वरणै जो विश्वपालै दहै॥ विश्वाधार उदार जाहि कहियै जो विश्वस्वामी अहै। जाको नामऊं विश्ववेद वरणै जो विश्वपालैदहै॥ विश्वाधार उदारजाहि कहियै जोविश्वक्षायेरहै। सोईवासन होइ धारि छलकोंया विश्वमांगैचहै ६७१॥ जाकेपंकज सेवलास पदहै श्रीशंभु ब्रह्माअली। नित्यानन्द तड़ाग साधुमनमें पानीय प्रेमावली॥ रागीको अनुराग भानु उदयो चिन्ता अंधारीदली। सोई बामनहोइ भे जन्मते त्रैलोक्य कालैछली ६७२॥ जाकेहेत तपैं अनेक तपसी योगींद्र ध्यानैधरैं। चारोंवेदपुराण शास्त्र मिलिकै आख्यान गनैंकरैं॥ ब्रह्माशेष दिनेश ईशसगरे पारै न पावैंडरैं। जन्मसो अति जो सुरै सुखदहैं आनन्द छावैं

धरैं ६७३ ॥ बोले वामनजू तबै बिहँसिकै इंद्रादि सों बात कों। मोकों का करतव्य भाषकु अबेपारेलघूभ्रात कों ॥ बारम्बार प्रणामकै कहहिंते संसारके तातकों। दीनानाथ दयाल दूरकरियै शत्रून को घातकों ६७४ ॥ गायत्री कहं बामनै सुरगुरुद्दीनो तहांतात्क्षना। कोपीनै जननी सुदएड शशिनैदीनो हरकवेमना ॥ पृथ्वीके हरिचर्म छत्रनभनेमाला सराखासना। ब्रह्मादीन्ह कमएडलै दुखदलै आनन्द बाढ़्यौ घना ६७५ ॥ दीनो काश्यप मेखला हरषि कै सप्तर्षि दर्भै दियो। आनन्देंसिगरे जबै बटुकके यज्ञो पवीतैकियो॥ जैजै-कार करैं भरे सुखमहा फूल्यो सबैको हियो। दीक्षापाइ सुरेश योंतिहियलै भिक्षाथेंरे सोहियो ६७६ ॥
दो० नक्षत्री छत्री जटी बलि क्षत्रीके यज्ञ।
भिक्षाहित जातेभये परम सज्ञसर्वज्ञ ६७७ ॥
मालनी ॥
मखमहि चलिआवैं। तेजआकाश छावैं॥ लखिसुरसुख पावैं। मोदभारी बढ़ावैं ॥हरि बटुगुण गावैं। फूल माला चढ़ावैं ॥ बलि रिपु बलिजावैं। जैमनावैं सुहावैं ६७८ ॥ बटुक दरशपाये। दैत्यआश्चर्य छाये ॥ बलिढिग सब धाये दूरितें शीश नाये ॥ बपुबरण बताये। विप्रआगौन गाये ॥ सुनि हिय हरषाये। देखिवे आपुआये ६७९ ॥ बटुक बदन जोहैं। चित्तमैं पूरि छोहैं ॥ नलिन नयन सोहैं। चापसी चारुभोहैं॥ रति पति सतमोहैं। विष्णु स्वामी मनोहैं ॥ द्विजबर यह कोहैं। आवते यज्ञ जोहै ६८० ॥ इमि हरि ढिग आये। देखि राजा लुभाये॥ चरण परशि भाये। यज्ञ अस्थान लाये ॥ बिनयकरि बिठाये। पाय पानी धेआये ॥ सब महं छवि छाये। बिप्र राजे सुहाये ६८१ ॥ तेहिक्षण बलिज्ञानी। दिव्य लावण्यसानी ॥ सकल सुख निशानी। कान मैं मोद दानी ॥ मन मथन मथानी। कारिणी खेद हानी ॥ सरसहरस खानी। चारु वाणी बखानी ६८२ ॥ प्रभु तव पद धारे। धाम मेरेपधारे ॥ दुखकलुष गरारे।

भीति धारे सिधारे॥ जप तप मख भारे। जे किये हैं हमारे॥ अबहिं सुफलसारे। भेनिहारे तिहारे ६८३॥

दो० अब कछु मांगहु करि कृपा मो दैहैं द्विजपाल।
सुनिमुनिकी गुखिकेकहत सुनिकेवचनरसाल ६८४॥

चौपाई॥

बामन कहहु अस रस भविबानी। तुम रण दान सूर विज्ञानी॥ कोकर तुमरे बंश बड़ाई। ब्रह्मादिक इक इक अधिकाई ६८५॥ हिरण्याक्ष तुमरे परदादा। जिनतें भगे विष्णु हरि जादा॥ जब बैकुण्ठ गये लै सूल। तबहिं दुहे दुनियांके सूल ६८६॥ दादा ऐसे भक्ततुम्हारे। जिनके हेत विष्णु बपु धारे॥ पिता तुम्हारे ऐसे दानी। तज्यो प्राण रिपु द्विजकी बानी ६८७॥ अहहु धर्मपुल कुलकुल तेरा। ताते भो मांगन मन मेरा॥ जो तुममोहिं देत करिनेहु। तीनि चरण धरणी कहं देहु ६८८॥ सो सुनि हंसे दनुज कुल चाता। बोलत भये बात बर ज्ञाता॥ सब जानो पै मांगन जानो। बहुरि मांगिये जो मन मानो ६८९॥

दो० देश खजाना धाम धन जो चाहो मुनिराय।
चाह होय तौ आपको ब्याहउ देउं कराय ६९०॥

सो० मुनिकी बलिके बैन कंज नैन जग जैन तब।
बोले छलके ऐन कोटि मैन छबि लैन सब ६९१॥

चौपाई॥

मोहि नहिं धाम ग्राम ले काजा। लोभी बिप्रहि दीजै राजा॥ तिननेंहिं में मैं कुटी बनाई। करिहौं तित अध्ययन सदाई ६९२॥ है संतोष दृत्ति मम भाई। बिप्रहि लोभ सदा दुखदाई॥ ज्यौं ज्यौं लगै लाभ पर पाई। त्यों त्यों होत लोभ अधिकाई ६९३॥ दीजै इतो जितो हम भाखो। स्मृति निषेध लोभहि करि राखो॥ तब बलि एवमस्तु यह गायो। दान हेत पानी मंगवायो ६९४॥

सो० सोलखि कवि सिरताज कह्यौ शिष्य सों बैन इमि।
करहु न ऐसोकाज यामें सबविधि नाशतव ६९५

चौपाई॥

और देऊ इच्छित इहि काल। पैन तीनि पग देऊ भुआल॥ हैंये विष्णु छली सुरकाज। हरि सब अवहीं द-रिहैं राज ६९६॥ तबबलिकह्योकह्यौ मैंदैन। अबक्योंनाहिं कहौं गुण ऐन॥ सोहि अधर्म होइहै आरज। सो सुनि बोले शुक्राचारज ६९७॥ सर्वस हानि जानिये जहां। श्रुतिकहं असत दोषनहिं तहां॥ पुनि ज्यों द्विजहि कहौ तोसोंचो। यहतौ विष्णु छलीनै जांचो ६९८॥ अबहोंभलो और कछुदीजे। इन पदको प्रमाण नहिं कीजे॥ यहहित विहित बातमें वरनी। नृपति धरम गुणि चाहिय करनी ६९९॥

दो० नीति रीति में प्रीतिकरि चलै जौन नर पाल।
जीति लहै गत ईतिसो करऊ प्रतीति भुआल ७००

कवित्त॥

ऐसोदान दीजे जामें फिरहूकरीजैदान सोनो पहिरीजै ऐसो जामें नहीं टूटै कान। ऐसी रीति लीजै निबहीजै जामें जन्मभरि ऐसो नाचलीजे जोगिरीजै सुखभर आन॥ बोभो सो उठैये पहुंचैये लै मंजिल जाहि थकि रहि जैयै दुखपैयै सोकहानिदान। गिरधदास सोचकीजे जोसकीजै करि नातरु तकीजे शोक मोह दीनता गलान ७०१॥

दो० इमि गुरुतें सुनि गुनि हृदय बलि धरमज्ञ सुजान।
जोरि करहि बोलतभये वचन रचन कल्यान ७०२॥

चौपाई॥

यह सब सत्य कह्यो गुरु ज्ञानी। पै मम मतसुनियेसुख दानी॥ देह अनित्य सबै जग जाना। जो दीजै सो अहै अपाना ७०३॥ तातें देऊं तीनि पद दान। लेऊं तीनिपद पर असान॥ ज्यौं जगदीश विप्र बनियांचो। केवल तीन छपापन सांचो ७०४॥ तौअस को मूरख जगमाहीं। जो यह कहै देऊंगो नाहीं॥ होऊंत्योंऊंसबवंचनकेरो। होइहि नाम बीचमें मेरो ७०५॥ ऐसो पात्र और जग पूजो। हे

गुरु मोहिं कि मिलिहै दूजो ॥ धन्यभाग मेरो ऋषिराई। जातें मांगत आपु कन्हाई १०६ ॥

दो० यज्ञ करै यज्ञेशकों कौन देइ अस अज्ञ।
आपुहि मनमें समुझिये धर्मधीर सर्वज्ञ १०७ ॥

सवैया ॥

सम्पति ज्यों हरि हैं हरिनू हमरी तेहि बीच कहा कछु हानें। है गिरिधारन की सगरो तेहि लेत कृपाकरि दानव हानें ॥ जौनहिं देउं तवै सुख मारि सबै हरिलेहुं महारण ठानें। लोक की उक्ति कहैं तव लोक कि लात की देवी न बात सों मानें १०८ ॥

दो० राज धर्म यश जाइ पुनि कोप करैं जगनाथ।
तातें दानहिं देउंगो मोदक ममदोउ हाथ १०९ ॥

चौपाई ॥

इमि कहि विंध्यावलिसों बानी। बोले बलि बसुधापति ज्ञानी ॥ लाउ कनक झारी भरिबारी। ल्याई सुनत पियारी नारी ११० ॥ शुक्रकहाजौं बात नमानो। तौद्रुत होउतोर धन हानी॥ सोनसुना बलि धर्मनिधाना।सदा एकमति हढ़रति दान १११ ॥ जिमि बन जात भवग तजितजाता। सुनहिं न सुजनमातकी बाता ॥ तिमिबलिहाथ बारिधरि खल्पहि। भेसुख मढ़त पढ़त संकल्पहि ११२ ॥ दानवपतिनी निज करझारी। राजत जगमगाति द्युतिभारी ॥ लखि छबिसकल सभा गतिभूली। कनकबेलि जनु फूलहिंफूली ११३ ॥

दो० पद्मपानि के पानिमें पानिपस्यौ जबआनि।
आतसबाजी अग्निज्यों तुरतबढ़े सुददानि ११४ ॥

चौपाई ॥

धस्यो विराटरूप तेहिकाल। चकितलखहिं सब हरिके ख्याल ॥ सिरस्वयंभु पुरपद पाताल। रविशशि लोचनतेज विशाल ११५ ॥ जेते लोकपाल दिकपाल। अंगअंग प्रति बसहिं रसाल ॥ ऋषि गन्धर्व यक्ष सुर व्याल। खगमृग निशचरउड़ुगन माल ११६॥ वसुआदित्य रुद्रकेजूह। सरि-

तसिंधु पुरशैल समूह ॥ रमासरस्वति आदिक शक्ति । वेद
पुरान शास्त्रकीपंक्ति ११७॥ वन्हिवारि महिव्योम बतासा ।
स्वर्गपताल लोकअरु आसा ॥ सब भगवत स्वरूपमहं सो-
वहिं । असुर अतिहि अचरज तुतहोवहिं ११८ ॥

दो० एकचरण निज शेषसिर धाप्यो आनंदओर ।
दूजोपद पठवत भए चारवदन के लोक ११९ ॥

चौपाई ॥

इमिवामन कहं बढ़त निहारि । भरेकोप सगरे अस-
रारि ॥ आयुध अमित हाथ महंधारि । चले चोप रणको
विस्तारि १२० ॥ छली छली इहि बधहु पुकारैं । दनुज
अथोर घोर ललकारैं ॥ तेहिक्षण बलिभे.कहत कितारि ।
हेदनुजौ जनिछुवहु सुरारि १२१ ॥ इमितिनकहं वार्यो
वज्रवारी । तदपि न तेमानहिं बलभारी ॥ लपटिगए पद
मैं नटपिधारि । अब न बढ़ै न बढ़ै उचारि १२२ ॥ सोलखि
हंसेविष्णु अवतारी । झटहिं दियोपदको झटकारी ॥ झट
झटप्रकट परेखलभारी । सोऊएकछबि सबननिहारी १२३ ॥

दो० बातबेग तरुताखतें फल सुगरहिं निमिटूटि ।
तिमिते सबगिरते भए वामन पदतेंछूटि १२४ ॥
कछुकानको हरिपारषद आइकरी अतिमारि ।
दैत्यभभरि भागतभए हाहाशब्द पुकारि १२५ ॥

चौपाई ॥

एक चरण पताललौं नाप्यो । दूजोचरण व्योमलौंथाप्यो ॥
तीजो चरण अरेदै मोही । इमि कहि कहत जोहि अहि-
द्रोही १२६ ॥ बांधहु वेगि असुर अभिमानिहिं । मिथ्या
वादिहि मिथ्या दानिहिं ॥ तब खगेश बांध्यो दनुजेशहिं ।
देखत सकल दैत्यसैनेशहिं १२७ ॥ हाहा कार भयो तेहि
काल । बंध्यो देखिकै दानव पाल ॥ पुनि प्रभु कह्यौ अरे
अभि मानी । तीजो पददै मिथ्या दानी १२८ ॥ नातरु हो-
इहि अधरम भारी । कहि कै देत न क्यों अघधारी ॥ सो
नाहीसमरथ देवेको । कह्यौकहा शुनिकै अविवेकी १२९ ॥

जलदो दै नत मारत तोही। भयो सुधादानी सुर द्रोही
सुनि प्रभुबचन शीशकहुं नाई। धर्मधीरबोले बलिराई १३०॥
दो० दीनबंधु सब सत्यये कारज कृपाकीदीठ।
पहिलो मोपग कीजिये नापि लीजियेपीठ १३१॥
धनतें चार गुणोधनी इमि सब कहहिं प्रमाण।
तातें प्रभु ले लीजिये तीजे पदको दान १३२॥

अनुष्टुप्॥

विष्णु नै पीठपैं धास्यौ पद चारु रसालकों। सुतलै बेग तें डास्यौ वरदान पालकों १३३॥

नराच॥

भये प्रसन्न सोम देखि दैत धीरकों तबै। धस्यौ सुहस्त मस्तकै प्रशस्तकै लखैं सबै। महत्तही चहत्त यौं कहत्त बात कों भये। मुकुन्द इन्द दूरकारि धीपती प्रभामये १३४॥ प्रसन्न मैं अहौं महान भक्त ईश तू भयो। निहारि तोहि मोहि होत मोद चित्तमैंनयो॥ सुनत्त बात ईशकी बली प्रसन्न होयकै। कहत्तयौंभयो सुबैननैन ओर जोयकै १३५॥
दो० हे प्रभु तुमईश्वर अहहु सबप्रकार सुखदानि।
जोकरिहौसो मोरहित जगहितसरसिजपानि १३६॥

चौपाई॥

तुमरे दण्डदिये तें साँई। मोहि न लाज डर हानि सदाई॥ अज अनादि तुम पंकज नैन। सबकहं दण्ड यथोचित दैन १३७॥ कृपाकरी भिक्षा मोहि दीनी। अपनी बिभव आप हरि लीनी॥ अहो भाग्य मेरे हैं स्वामी। जो घर बांध्यो खगपति गामी १३८॥ तेहि क्षणमैं आये प्रह्लादा। बलि प्रणाम कीन्हों लखिदादा॥ सजल नयनकछु लज्जित भये। नीचो मस्तककरि रहिगये १३९॥ तबप्रह्लाद दण्डवत्करिकै। हरितें कहतभये मुदभरिकै॥ कियो धर्म स्वामीकोस्वामी। इहिसिखदीन्ही अन्तर्यामी १४०॥ रह्यौ शुमानयाहि अधिकाई। कोनकरै मदमंसतत पाई॥ तबबिरंचिचारज्ञ करजोरे। बोलेलखि वामनकीओरे १४१॥

दो॰ हे प्रभु ऐसी कारिये जनि छोरिय बलि दनुजेश।
दाताकहं भिक्षुक नहीं बांधिसकै बिश्वेस १४२॥

सवैया॥

जो तुलसीदल आपुहिं एक चढ़ावतो सो गतिपावतो भारी। दीन्ह तिहूंपुर दानवनाह तिहूंपुर बांधेउ अंबुज धारी॥ छोटो स्वरूपकियो पहिलें छलतें पुनि आपुनिदेह पसारी। तापर पीठदई अपनी न अबौं किमि त्यागत हे असुरारी १४३॥

सो॰ यह सुनिकै शुभ बैन कहत सरोरुह नैन तब।
कछुन कहहु तुम बैन मम अरु जनके बीचमैं १४४॥

छप्पय॥

जबहिं कृपामैं धरहुं करहुं प्रथमहिं मदकदनहि। ता पैं जानहु मोरि कृपाजिहि धनपै मदनहिं॥ जहं मैं तमैं नाहिं जहां मैं तहं मैं नाहीं। तातें श्रीगुण बासुहस्यौमैं गुणि मन माहीं॥ यह है ममभक्त किरीट मणि यह मम प्रिय तम रसमयो। यानै हमकों सर्वस दयोयानै सर्वस ममलयो १४५॥

दो॰ करहु सुतल बलिबास तुमसोना कछुकी नाक।
दिविपति ह्वैहौकोउसमय धर्मधीरसतवाक १४६॥
इमि कहि बंधनछोरिकै धरयौ माथपैं हाथ।
पौर अंगनिज सांगता दीन्ही दानवनाथ १४७॥

चौपाई॥

बरमांगहु बरख्योभगवाना। दरश्देहु नितदैत्यबखाना॥ एवमस्तु कहि हरि अरि धारी। बोले बहुरि नैन भरि वारी १४८॥ हे बलि हमतुमरे आधीन। तुमहौ सतव्रत धीरधुरीन॥ तुमतौ बंधे सुहृरत भाई। मोहि बांध्योनिज हारसदाई १४९॥ छलकहं कियो आपुछलिगये। बलिको बलि सदैव हमभये॥ अहोधन्य हम हेबलिराव। तुम सो भक्त परमहित पाय १५०॥

दो॰ वचन कहत लोचन बहत महत प्रेमबस श्याम।

पुनिपुनिबलि पायनपरैं उरआनन्द सुलाम १५१॥
ऐसे प्रभुकहं छांड़ि जे करहिं औरकी आश।
धिकधिकतािकेजननिअरुजनकहिगिरिधरदास१५२॥

इन्दिराछन्द॥

बलि प्रभा भरे मोद सों छये। भगति सों भरे भाषते
भये॥ प्रभु कृपाकरी दुःख सों गये। कुमति कों हरी पुण्य
उदये १५३॥ तुमसमान कोदीनदुःखहा। अपुन ज्ञानको
चित्तसों चहा॥ हरि सबै लियो दोष जोरहा। हरि हमैं
कियो पुण्यमै महा १५४॥ सुखभरे तदाभक्तितैंमये। दनुज
के ददावोलते भये॥ अहहु श्रीपते प्यारसों छये। अब सबै
हते भावही दये १५५॥ निरखिकै सबै प्रेमसों छई। बलि
त्रिया तबै भाषती भई॥ प्रभु भक्तोकस्यौ गर्वतागई। अपुन
कै बस्यौभक्ति कोई१५६॥ बिधि उमा रमा शेष शारदा।
हरगजो उमा पूजतै मुदा॥ चरण दोउकरै चक्र औगदा।
सुखद किंकरै नाथहो सदा १५७॥ निरखियै नहीं आपहैं
नहीं। तुमबिना कहींठांव है नहीं॥ नभ हवा मही तेज
को मही। प्रभु अहो सही विष्णु नित्यही १५८॥

दो० आदि अन्त अरु मध्य तुम केसव अहहु समन्त।
तुमहिं तजैं औरहिभजैं ते मानव अघवन्त १५९॥
सो० इमिसुनि सबकी बात शक्रभ्रात हर्षितअति।
पुनिपुनिपुलकितगात सुतलराजदीनोबलिहि१६०॥

चौपाई॥

सुन्दर बरणि न जाइ सुतल तल। पद्मराग मणिमण्डित
थलथल॥ जेहिपालत अजेय बलि बरबल। प्रकट नीतिशुभ
रीति अमलकल १६१॥ जहंगाजत राजत दानवदल। समर
भयंकर सकल सबलभल॥ महल महल प्रति चहल पहल
चल। सरित सरोवर निर्मल नवजल १६२॥ कुसुम कुमुद
मंदार कमल भल। बहुविधि पादप छन्द बिमल थल॥
नमितडार भार भर बरफल। केकी नृत्यनि किलकैाकिल
कल १६३॥ नरबनिता बिहार मणिमण्डल। हासबिलास

भाव अतिकोमल ॥ मारुतमंद तापुसहसम दल । मिश्रित संग पराग नव उत्पल १६४ ॥

दो० जहांविराजत आपहरि शङ्ख गदा अरिमोक्ष ।
कहातहांकीछविकहियमहामोदसंदोह १६५ ॥

वसुकला ॥

जहंकणक वर्णि । सुखदेतधर्णि ॥ मणिजटितधाम । सोहैं ललाम १६६ ॥ वनविविध भांति । बहुविटपपांति ॥ अति लसे फूलि । अलि रहे भूलि १६७ ॥ शीतल बतास । पूरित सुवास ॥ बहुवनेरङ्ग । विचरहिंकुरङ्ग १६८॥ जहं सरसुदेश । सोहहिं विशेष ॥ जल पुरतज्योति । जगमग होति १६९ ॥

दो० सरवरमें अरविंदभाखविविधि रङ्ग सरसाहिं ।
फटिकशिलाके बीचमणिजरे चपलदरमाहिं १७० ॥

चौपाई ॥

सरिता सोहति उज्जल धार । फूले वारिजवनी कतार ॥ मनहुं धरणि सारीवर धारी । जैसो कसीदन सुघर संवारी १७१ ॥ लहरललाम चुनन छविकारी। कनकासिढ़ो वर वनक किनारो ॥ मणिखामोते सरिकी लाल । नीचेतें आवकत रङ्गलाल १७२ ॥ जनु पहिरे सारीपाटनकी । वर लहंगा नीचे साटन की ॥ तैसेइ धाम जंवहरी भारे । धन निधान सुखप्रद दुखहारे १७३ ॥ जामाभीति श्वेत सोइ दीसी । छज्जा छज्जेदार छजीसी ॥ गोला गोल अमोल विराजै । कमरबंध मनु अनुपम छाजै १७४ ॥ जरेरतसोइ भूषण भारे । हैंमनु अङ्गअङ्ग महं धारे ॥ हाटक के फाटक सरसाहीं । जगमगाहिं भरि प्रभा सदाहीं १७५ ॥

दो० सड़क सोहाई सुखभरी पूरित अतर सुवास ।
हयगय रथमण्डित सदावरपति सघनउजास १७६ ॥
भारीशोभा सुतलकी को करिसकै बखान ।
जहांकरत बलिराजकी दानवकुल सिरथान १७७ ॥

चौपाई ॥

बलिकी सभा विराजति भारी । बैठहिं जहं बलसींव

सुरारी॥ शक्र सरिस सोहत सिंहासन। तापर करत असुरपति आसन १७८॥ शुक्र च्यवन भृगुआदिकमुनिवर। सोहहिं बैठे निगम मूर्त्तिधर॥ बलि महाराज सभा महं शोभत। निज यश बलसुर मुनि मनक्षोभत १७९॥ करत बारता वामनकेरी। मुनिमण्डली चहूंदिशि घेरी॥ देखहु कसकीनी चतुराई। छलनचहे मोहिसुर सुखदाई १८०॥ पै वामन हमतें छलिगये। निशिदिन ठाढ़ द्वारपर भये॥ हेगुरु अहो भाग्यहैं मेरे। द्वारपाल केसव जिनकेरे १८१॥ जौनदान देते मुनिराई। यह सुख कहं मिलतो मोहि आई॥ जोइ दर्शन दुर्लभ विधि हरकों। सो नितकरियत प्रातपहरकों १८२॥

दो॰ इहिविधिहंसिहंसिकैकरहिं बातदनुज सिरताज।
राजहिं राज समाज मेंश्रचुलवा पदराज १८३॥
सो॰ तैसे तिनके द्वारसोहहिं जगदाधार प्रभु।
सुन्दरता आगार मारहजार लजाहिं लखि १८४॥

बरवै॥

बरने चारु बारिजसे लसहिं ललाम। नूपुर मधुरेबाजहिं जन अभिराम १८५॥ जंघ रम्भ खम्भासम सोहति चारु। सुमिरत संतत संतन सुखदातारु १८६॥ कटिलखि केहरि सोहत किंकिणियुक्त। मुक्तमनुज मनबंधन बंधनमुक्त १८७॥ पीताम्बरबरलपटेउ शोभाधाम। घनहिं घेरि जिमिबिजुरी लसतिललाम १८८॥ तैसियबर रोमावलि लखहु विचारि। उदर उदधिढिग उपजी सैसर ब्यारि १८९॥ मरकतिकारसे सोहत उत्तमभाग। मरकतगिरितें निकरेजनु युगनाग १९०॥ कंबुकण्ठ मनु लसी माल बिभाति। तन कलिन्द पैं यमुना जनु दरशाति १९१॥ वदन देखि शशि सोहत तिलक सुभाल। नीलकमल युग तापर चापबिशाल १९२॥ कानन कुण्डल सोहत सीर प्रकाश। गुरु भृगुपति जिमि राजत शशि दुहूंपास १९३॥ शीशमुकुट मणि मण्डित छबि भरपूर। किधौंसूरपैं शशिकै शशिपैं सूर १९४॥

दो० इमि हारे बलिराजके राजतहैं सुरराज।
दीनबन्धु सुखमासदन भक्तवत्सल ताकाज १९५॥
स्वर्ग स्वर्गपतिकों दियो हियो मोदसोंपूरि।
एकरूप उपइंद्रह्वै रहैदैन सुखभूरि १९६॥
इमि यह वामनदेवको अहैचारु अख्यान।
सुनिपढ़ि गुणिमानवलहहिं वासुदेवअस्थान १९७॥
अपनोइन्द्रीनो विप्रबलिनपुनि ठाढ़ बलिठौर।
असुप्रभुतजिको मन्दमतिभजै देवता और १९८॥
तातें मन क्रम वचन इकरिके सब विश्वास।
तरणी तरु दुर्गम अहैभवसमुद्र जलवास १९९॥
सो० शाखसून्यग्रह चन्द्र संवत कार्त्तिक पत्त सित।
द्वादशि दिन सानंदकरी कथानिस्तरनहित ८००॥
दो० मन बलिबंधन प्रेमको सुतल सुक्तिअत वास।
वामन वामन आसुहो भजुसठ गिरिधरदास ८०१।

इतिश्रीगिरिधरदास विरचितं बामनप्रभु कथामृतं समाप्तम् शुभमस्तु।

———

अथ परशुराम कथाऽमृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

चरणकमल गोपाल के देत अमल आनन्द ।
तैसेइ वल्लभ लालके दूरिकरैं दुख द्वन्द १ ।
अर्जुन सोइ महीप भुजकामादिक परिवार ।
परशुराम को नाम सोइ छेदक कठिन कुठार २ ॥
सुमिरि हृदय गुरुदेवको भृगुपति चरित उदार ।
बरणत बर बिश्वास लैकरि दैहैं करतार ३ ॥

जयकरी छन्द ॥

भृगु सुत च्यवनभये मुनिराई । सो निज व्याहचहे हरषाई ॥ गाधि नृपतितें भाषेउ जाई । देऊ सुता निजमो कहंराई ४ ॥ तबनृप शोचिशाप भयछाई । कहतभये यह युक्ति बनाई ॥ श्यामकर्ण हय सहस मंगाई । तबहिं लेऊ कन्यहिं हरषाई ५ । मुनि सुनिगये बरुण पहँधाई । तहं तें नृपहि दियो हयल्याई ॥ सत्यबती गुणगण अधिकाई । नृपति सुता व्याही सतभाई ६ ॥ एक समय सो पति रुख पाई । बोली बचनहिं शीश नवाई ॥ मोहि अरु मम जननिहि चटपिराई । सुवन होय सो करिय उपाई ७ ॥
दो॰ द्विज क्षत्रीके दोय-चरुकरि दीने मुनिराइ ।
तेरो यह यह जननिको तियहि दीन्ह समुझाइ ८ ॥

चौपाई ॥

लै तेहिगई जननि के पास । चरुदै कह्यौ तासु इतिहासु ॥ लै तिय बुद्धि जननि कह धन्या । निज मोहि दै मम लै तैं कन्या ९ ॥ तब चरु ह्वैहै नीको भारी । तातें मैं यह कहति बिचारी ॥ तोहि तौ पति समर्थ सब अहैं । करिहैं क्षणहिं सकल जोचहैं १० ॥ इमिकहि बदलि चारु चरुखायो । सो दृत्तान्त च्यवनतप पायो ॥ कह्यौ कारमकीनो

महि नीको। होइ बिनाम बिप्र छत्रीको ११॥ सत्यवती तब बिनय बखानी। बोले बहुरि बचन मुनिग्यानी॥ सुतको सुत छत्री सम होई। सुनिकै मोद गह्यो मन सोई १२॥ तब यमदग्नि भये सन्तान। परम तेजनिधि जनक समान॥ तिन सुरेणुका नारि बिवाही। बसुमदादि सुत जनमें ताही १३॥ लघु श्रीराम श्याम बपुधारे। अक्षय त्रितिया दिन अवतारे॥ बल बुधि बिक्रमतेज निधान। कर कुठार बाणा धनबाण १४॥

दो० परशुराम दुर्द्धर धरण असरस के अंभोधि।
छहैं दहैं संसारको एक निमिष महं क्रोधि १५॥

चौपाई।

तौन समय यथिवंशीभूप। अर्जुनअरिहि कृतान्तस्वरूप॥ दत्तात्रेय बिष्णु अवतार। तिनकर सेवन कीन अपार १६॥ दत दत्तवर सो नर पाल। भयो अजेय समर बिकराल॥ सहस बाहु रिपु यथिपैं राऊ। समर चाऊ नितहै हय नाऊ १७॥ सो रावणसों रणकरि क्षणमैं। लीनो बांधिखेल गुणि मनमैं॥ करतेंधरि रोकै पुनि रेलै। सन्दरादि गिरि-कन्दुक खेलै १८। सोइ प्रचण्ड छत्री इकबार। गो मुनि आ-श्रमकरत शिकार॥ यामदग्नि बिनहेयमदग्नि। धूमबिहीन पीन तप अग्नि १९॥ भूप जानि मुनि नीति निकेत। कीन्ह निमंत्रनसैन समेत॥ काम धेनु मुनिके आगार। तिन सब कियो राज संभार २०॥

दो० गज हय मनुजन हेत तहं भोजन किये तयार।
घृत दधिपय सरिता नदी मोदकमिष्ट पहार २१॥

चौपाई॥

असन बसन भूषण धन धामा। यथा योग कीनी सब सामा॥ बार बधू नाचहिं बिधि नाना। गान तान सामान बंधाना २२॥ सब प्रकार सब बस्तु न दीनी। मुनिबर नृप की जाफत कीनी॥ प्रात समय हैहय अभिमानी। करा-मातसुरभीकी जानी २३॥ मुनिते कहोदेऊ मोहिं गाऊ।

तब तिन नृपहि कहा समुझाई ॥ तुम कहं वैभव सकल अपार। हम तपसी कहं इहै अधार २४ ॥ कहा करउ गे लैके सुरभी। होइहि तुम्हैं अधर्म अउरभी ॥ सुनि बा सहस बाहुबलवाना। अति मदमत्त नेक नहिंमाना २५ ॥

दो० छोरि लई सुरभी तबै चलेउ चंड नरराउ।
मुनि कछुनहिं भाषत भये संतत शीलसुभाउ २६ ॥

सो० आये तब भृगुराम सुन्यो हवाल नृपाल को।
कहीजनका अभिराम गाफतकी आफत सकल २७ ॥

दो० चले कोप विस्तारिकै शर कुठार धनुधारि।
देखो मग अर्जुन कटक गर्जत भये प्रचारि २८ ॥

चौपाई ॥

फिरो नृपति सुनि सदल रिसाई। गर्ज्जत घन समान अधिकाई। सचढ अक्षोहिणीसचाई ॥ चलेउभेरि सहनाइ बजाई २९ ॥ हय गजरथ मनुजन के ठट्ट। चले चलांक धरे धनु पट्ट ॥ मारुमारु धरुधरु ध्वनिभरी। फिरत सैन धरणी थरथरी ३० ॥ घने शूल असि चर्म चमक्कहिं। घने वीर रण धीर तमक्कहिं ॥ घनेठने रण प्रबल गरज्जहिं। जो मुनिकै रिपु हृदय लरज्जहिं ३२ ॥

दो० चहुंदिशा तें घेरिकै परशुराम कहं बीर।
लगे बारि धर खेत जन तीक्षण कोटिन तीर ३२ ॥

हरिगीतो छन्द ॥

तीक्षण सुकोटिन तीरलागे धीर तजन प्रचारिकै। चहुं ओर जिमि घनघोर घेरे राम रवि ललकारिकै ॥ आयुध अनेक अनेक बरसहिं वीर भरसहिं रिसछये। अब मारि लेहु न जाइ जीवत बात इमि बरणतभये ३३ ॥ तब राम छवि अभिराम लमतहं बरकामकहं करतेभये। रिसिपूरि एक सटेक बीर अनेक सों लरते भये ॥ थिर चरण करगर धरणतें सब धरणि कहं भरते भये। घन छन्द में रवि से निकरि अरि प्राणकहं हरतेभये ३५। आकरषि धनुअति हरषि मनु शर बरषि रिपु गण बधतभे। हय हय हयन

कहं काटि काटि महान संगर नचतभे। मथिमथि सुरथ पथ किये चूरण धरणि पूरण सब करी। पद चारि सुरपद चारि कीन्हों मारि बहु विधितापरी ३६॥ कर काल दण्ड प्रचण्ड सो कोदण्ड सोह्यो राम को। बलधाम पूरण काम तेज ललाम रण अभिराम को॥ जेजे गये हरि साम्हने ते ते गये हरि लोकमें। जिमि जरत ज्वलन महान में तृण तिमि पराक्रम ओक में ३६॥

दो० क्षण में शोणित की सरित प्रगट करी बिकराल।
भरी मेदिनी क्षतक सों परशुराम रिपु काल ३७॥

भुजंग प्रयात।

बड़ो बीर बीरानमें सो निहंता। महाधीर धीरान को धीर हंता। लस्यो लै कुठारै महा शत्रु अर्द्दी। लसै ज्यों प्रलैकाल केरो कपर्द्दी ३८॥ तहां शुण्डबीतुण्ड के काटि काटी। महा रुण्ड मुण्डान सों भूमि पाटी। ध्वजा छत्र टूटे लसैं युद्ध भारे। मनो व्योमतें टूटि तारे कतारे ३९॥ बड़े बीर जेते महीपाल केरे। सबै भंजि दीने तबै काल डेरे। महा कच्छ मैं ज्यों लगै दीह दावा। तथा धीर सोहो महा रोस छावा ४०॥ घने गीध औ स्यार को मोद दीनो। रचौ जीति मानो महा भोज कीनो॥ यमा गार मैं कै जमा भट्ट ठट्टै। नरेशै कियो वाहिनी बिन्नु भट्टै ४१॥ लस्यो कोप धारी महा सो कुठारी। तहां घोर संग्राम में शत्रु हारी॥ प्रलै काल को सो कस्यो कालभारी। लस्यो लैपिनाकै मनो अंध-कारी ४२॥

दो॰ इमि निज दलको नाश लखि महा कोप कहं ठानि।
चलतभयो अर्जुन नृपति अद्र्ध सहसधनु तानि ४३॥

चौपाई॥

बरसतभो बाणनकी धारैं। महा मेघ सम करि झल-कारैं॥ ताके सरबर सरप सरीस। दौरि रहे सजोर सब दीस ४४॥ तब बलधाम रामरण धीर। चले प्रचारत हारत तीर॥ एक धनुष अति लाघव टाटत। सिगरे शर रिपु

बरके काटत ४६ ॥ पुनिसो गरजि महारणकर्कस। खाली किये करोरन तर्कस ॥ बाण पंचशत एकहि बार। त्यागत बहुरि न लागतिबार ४७ ॥ महामेघसों अंगप्रचण्ड। तड़ित समूह सरिस कोदण्ड ॥ बेगबायु बलबल्यौअपार। बरष्यौ बिबिध बाणकी धार ४८ ॥ सहसबाहु को लखिबल भारी। कोपित भये परशुधनु धारी ॥ अरिके काटिकाटि शरभारे। मेघसरिसगरजे हथियारे ४९ ॥ लैकुठार भुजकाटनलागे। रण बसुधा कहं पाटन लागे ॥ जिमि महान पादप की डारहिं। काटै नरकर धारि कुठारहिं ५० ॥

दो० सहस परशुधर काटि इमिमनुजनाथ के हाथ।
सुदासुदाकरतेभये धरतें गरसहमाथ ५१ ॥

सो० देखिपिताको नाश अयुत सुवननरपालके।
भागि गये भरित्रास गांसभरे अपनेसदन ॥

चौ० मारि महारिपु गायलिवाइ। जनकपास आये मुनि राइ ॥ बंदि चरण जोरे दोउ हाथ। बोले वचन वीर बर नाथ ५२ ॥ हे प्रभु अभिमानी मदछायो। सहसबाहु यम सदन सिधायो ॥ तब प्रताप तेहिबधि सहसैन। लायोगऊ छोरि निज ऐन ५४ ॥ सुनिकै परशुराम की बानी। मुनि जमदग्नि ज्ञानकी खानी ॥ बोलेविप्र विप्रके नायक। विप्र धर्म संयुत सबलायक ५५ ॥ तात अधर्म कियो यहभारी। बालक बुद्धि दया विस्तारी ॥ क्षमा धर्म है ब्राह्मण केरो। नहिं चाहिय असकोप वड़ेरो ५६ ॥ युद्ध धर्म क्षत्रीकोअहै। द्विजजौं करै शर्म नहिं लहै ॥ हम भिक्षुक कहं चाहिय काह। सब परशीलदया निरवाह ५७ ॥ जौं नृपगयोरच्यौ लैगाइ। तौका हरिनहिं सकें जिवाय ॥ इतनी करीदया कलंकानि। साहसकरे विप्रपनहानि ५८ ॥ तुममास्यौ नर नातहि ताता। तातेंभयो पाप दुखदाता ॥ नरपतिबरकहं मारै जोय। अधिक ब्रह्म हत्यातें होय ५९ ॥

दो० तातें तीरथकरहु तुम जातें यह अघजाइ।
अब असकोपन कीजियो जासों धर्म नसाइ ६० ॥

तोटक॥

सुनिकै पितु बात कुठारधरे। अभिराम प्रणामहिं राम करे॥ करिबे महितीरथ चारुचले। संगमोहहिं विप्रअनंद रले ६१॥ जित जाहिं नहांहिं तहां पहले। वर विप्रन देहिं सुदान भले॥ तहंकी विधितें उपवास करैं। निज तीरथको अघनास करैं ६२॥ इमितीरथ संचित एक करयौ। सब पाप कुतापहिं आपदरयौ॥ पुनिआइ पिता ढिगसो-दमए। पदपैं परते भरि प्रेमभए ६३॥ लखिकै सुतकोयम-दग्निमुनी। हतपाप अनंत प्रताप गुनी॥ अति छावतमो-दभये मनमैं। बहुआशिष दीन्हि सोई छनमैं ६४॥

दो० इमिनिवसें निज पितु सदन पितु सेवी श्रीराम।
तेजपुंज प्रभुता भरे परम पराक्रम धाम ६५॥

चै।० इकदिन च्यवन सुवनकी नारि। गई कलश लै भरिबे वारि॥ नदीतीर आई छबिछाई। तितदेखीशोभा अधि-काई ६६॥ वर गन्धर्व चित्र रथनाम। जलक्रीड़त लै बाल ललाम॥ कंठमाहिं अर्पित भुजदंड। सरिस वितुण्ड सुंड छविमंड ६७॥ मद विह्वललोचन रतनारे। वसन सिहीन पीन तन धारे॥ भरि भरि अंजुलि मेलत पानी। हास विलास कलासर सानी ६८॥ कबरीखुली खसत परसून। सुखप्रकाश चंदहुते दून। सटि सटि वसन रहे तिय अंग। पिय जिय करतअनंग उमंग ६९॥

दो० करन कमल पुनिकर कमल अमल कमल से नैन।
चरण कमलसे चारु अतिकमल वरण छबिऐन ७०॥
कमल वदन सुखमा सदन कमल माल उरमाहिं।
कमलभरो सरिमैं खरी वनिता वृन्द नहाहिं ७१॥
जलभीने दरशाहिं अति उन्नत उभय उरोज।
जनु सरोजकी कलिन पैं ओसपरी भरि ओज ७२॥

चै।० छवि निरखत रेणुका लुभानी। घरी एक तित खरी विलानी॥ पुनि पतिको भय भरि भरि वारी। गई आसु जित मुनि व्रत-धारी ७३॥ हेतु विलंब जानि धरिध्यान।

बोले कोपगहे मुनिचान ॥ तबमन लग्यो चौर नर पाहिं। है अब मम लायकतू नाहिं ७४ ॥ इमि कहि कही सुतन सों बानी। मातु शीशकहं काटहु ज्ञानी ॥ सुनितिन सुतन बात नहिं मानी। तब मुनि रामहिं देखि बखानी ७५ ॥ तात भ्रात सह मातहि मारहु। धर तें भिन्न शीश करि डारहु ॥ सुनि गुनि जनक बचन सुनि ईश। काटि लिये सबहिनके शीश ७६ ॥ ह्वैप्रसन्न तब जनकबखानो। मांगहु वर जोई मनमानो ॥ राम कहा जीवहिं सुतमाता। तहिं जानहिं मोहिं राम निपाता ७७ ॥

दो० ह्वै प्रसन्न मुनिवर कह्यौ एवमस्तु हेराम।
सुतन सहित जीवत भई तब रेणुका ललाम ७८ ॥

चौ० एककाल अर्जुन सुतसारे। रामरहित मुनि धाम पधारे ॥ तहां सकोप देखि मुनि दहहि। बध्यो तेज तप ज्ञान समूहहि ७९ ॥ तबरेणुका रुदन किय भारी। हाहा राम प्रभु बध कारी ॥ सुनिकै मातु रुदन तित आइ। देख्यो शीश बिनामुनिराइ ८० ॥ लागेकरन महान विलाप। पस्यौ हृदय भूरि संताप ॥ हाहा तात गये कित आपु। केहत न कछु लखि मम संतापु ८१ ॥ अहो कस्यो दुष्टन अघ काजु। नहिं चीन्ह्यौ कछु धर्महिं आजु ॥ क्षत्री भये महा मद शाली। अविचारी शठ अघी कुचाली ८२ ॥

दो० तातैं सबको मारि महि करौं अक्षत्री नाम
तब कहवावों जगत में भृगु कुलमण्डन राम ८३ ॥

वसुकला ॥

इमिकहि सुकोपि। मुनि चलेचोपि ॥ करगहिकुठार। अति निशित धार ८४ ॥ रिपुपुरी जाइ। बलकों बढ़ाइ ॥ सुत दशहजार। जे बलअपार ॥ तिनकों निपांति। डास्यो सुभांति ॥ शिरकों पहार। कीनो अपार ८६ ॥ पुनि घूमि घूमि। नृप रहित भूमि ॥ कीन्ही प्रचण्ड। क्षुद्रित अखण्ड ८७ ॥ एकईस बार। भार्गव कुमार ॥ कीन्ही निक्षच। वसुधा सबच ८८ ॥

सो० दुखतें इकइस बार छर कहं ताड्यौ रेणुका।
तातेराम उदार तितनिहिं बारनिछत्र किय ८९ ॥

चौपाई ॥

तबहिंस्यमन्तक पंचकआइ। शोणितके नवकुंडबनाइ॥ कीन्हों यज्ञ सकल अघ मोचन। श्री भृगुनाथ पितर मन रोचन ९० होता कहं दीनी दिशिप्राची। ब्रह्माकेर दच्छिण रंग राची॥ पश्चिम अध्वर्यहि मुनिज्ञाता। उत्तरदिशा दई उदगाता ९१॥ सकलभूमि कश्यपकहं दीनी। भई काश्यपी तबहिं नवीनी॥ इमि करि यज्ञ सज्ञमुनि राइ। मुनिन सहित वर नदी नहाइ ९२॥पाप ताप दहि लसे सुजान। भानु यथा अंबर अस्थान॥ तब यमदग्नि दिव्य तन पाइ। ऋषि सप्त मनभ मैं जाइ ९३॥ प्रमुदित होय पितर तब आए। बर मांगहु बोले हरषाए॥ राम कहा ये रुधिर तलाई। तीरथ होहिं देहु सुखदाई ९४॥ एवमस्तु कहि पितर सिधाए। राम हृदय आरामहिं पाए। विगत राग ह्वै गुणधाम। कीन्ह महेंद्राचल विश्राम॥ ९५॥

दो० इमि श्री भृगुपति रामको जन्मपरम अभिराम।
जे सुनिहैं पढ़िहैं मनुज ते लहिहैं मन काम॥ ९६॥
जब जब होतअधर्म है धरणीमध्य अपार।
तबतब राखनधर्म को विष्णुलेत अवतार ९७॥
कोटयाल असदूसरो प्रणत दुःखहंतार।
जापैं जाइय शरण कों तजिकै नन्दकुमार ९८॥

सो० श्रीवल्लभके लाल दीनदयाल कृपालमति।
तिन्हकीकृपा विशाल भोपूरणं यहचरितअति ९९॥

दो० रसनव वसु अरु चन्द्रमा संवत अगहनकृष्ण।
प्रतिपद गुरुदिन यहकियोपूरण गुणनिधि कृष्ण१००॥
गिरिधर गिरिधरलालके पदपरागको बास।
चाहतनिशिदिनदीनअतिलघुमतिगिरिधरदास१०१॥

इतिश्री गिरिधरदास विरचितं परशुराम कथामृतं समाप्तं शुभमस्तु॥

———

अथ रामकथाऽमृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

व्रतवल्लभवल्लभ सदा आचारज अतंवस ।
वल्लभ मेरेमन बसो करनविघ्न विध्वंस १ ॥
जगुदाजगुदायक सदा करन नन्दआनन्द ।
राधाआराधित चरण जयजयश्रीनन्दनन्द २ ॥
दशरथसुत दशमुख दमन दशदिशि सुयशप्रकाश ।
करक्त राम अभिराम मम उर आराम निवाश ३ ॥

चौपाई ॥

हिरणकशिपु हिरण्याक्षगरारे । हरि बराहनरहरि ह्वै मारे ॥ तबतेभये विश्ववाघरमें । परमयशी कै करी उदर में ४ ॥ रावण प्रथम महाबल राशी । समरदक्ष परपक्ष बिनाशी ॥ सुखह्वै पंच पंचमुख भगत । वरप्रताप सो जीत्यो जगत ५ ॥ दूजोकुंभकरण परदरन । कज्जलगिरिसे जाको वरन ॥ कन्दरसरिस नासिका करन । सिर बड़पने शिखर सदहरन ६ ॥ सो असुरेशअनुज जबचलतो । तबसंग्रामहि मण्डलहलतो ॥ ताकेखात मनुज म्रग कैसे । बदन माहिं सक्तुकन जैसे ७ ॥

दो० तासुअनुज हरिभक्त मणिभयो विभीषण नाम
जासुबड़ाई मुनिन जगगाई अतिअभिराम ८

चौपाई ॥

तीनक्तं बंधु बिपिन चलिगये । बरहित घोर करत तपभये ॥ बक्तत कालतित बीत्यो जबहीं । आये तहां पितामह तबहीं ॥ उठक्त पुत्र मांगक्त बरदान । तुमकनो तप दुसह महान ॥ सुनि बिधि बचन निशाचर नायक । ज्यौं सप्रेम निरखि बर दायक १० ॥

बिशेषिका छन्द ॥

सोहहिं बीस भुजा खलकी अति कांति मढों । मानहुं कज्जल के गिरिसों अहि नारि कढों ॥ मस्तु कहैं दशसुन्दर शोभित रूपभरे । मानहुं मर्कत मन्दिर ऊपर कुंभधरे ११ ॥ कन्ध लसे उपवीत बनी छबि तासु भली । मानहुं पावस बादर मैं बककी अवली ॥ सोहत लाल सुअंबरता कढ़ि बीच घनो । रौद्र भयानक मैं लपटयो परतच्छ मनो १२ ॥ रावण के शिर चन्दन लालत्रिपुण्ड लसै । सूर मरीचिमनो तम ऊपर तीन बसै ॥ शीश शिखामहं सोहहिं बेलके पत्र हरे । मानहुं नागिनिने शुककों गहि बांधि धरे १३ ॥

दे।० करि प्रणाम बोलो बचन अमर करहु अमरेश ।
छाहिं अहैं नहिं अमर सुत तू किमि रहै हमेश १४॥

सो० तबबोलो दश शीश तजि नर बानर अपरसों ।
मैन मरों सुर ईश एवमस्तु सुनि बिधिकहो १५ ॥

चरणा दोहा ॥

कुंभकरण की बुद्धि फेरि कै नींद दई मति ओक । भगवत भगत बिभीषण कों दै जातभये निज लोक १६ ॥

चौपाई ॥

बरलहिकै पुलस्त सुत आये । तीनहुं ते निज मंदिरन आये ।तब मातामह मिल्यो सुमाली । संग लिये कोटिन बल शली १७ ॥ निशिचर दलले रावण बंका । जीति धनेशह लीनीलंका ॥ लाग्यो राज करन दशशीश । जीति जगतसुर बर अवनीश १८ ॥

दो०मेघनाद जन्म्यो सुवन मन्दोदरि तें ताहि ।
जीति शक्र जानेलियो वर बिधितें हितचाहि १९ ॥

छप्पै ॥

(हा पार्श्व अति काय निकाय अकंपन कंपन । योनि तन पूपाक्ष अचक्षुर अरि अरि कंपन ॥ धूम्रअक्ष मकरक्ष बेज्र रदचण्ड महोदर । त्रिशिरा कुंभ निकुंभ विघ्न सुमश अपरदूर ॥ इन सबको ईश प्रहस्त रणमस्त सैन

पति संग लै। दशकन्ध लंकराजत भयो हिरण कशिपु सम ढंग लै २० ॥ कवित्त ॥

मद अजमुख बुद्धि हद गजमुख सम बलधर परको समर सनमुख यम। तीन मुख बासुकी सो रोसवन्त अष्टा बिसुख अधीको दुखदाता सूबीसुखतम ॥ राज्यो दशमुख दश शतमुख समधीर एक बीर शरण हरण अभिमुख भम। चैन चारमुख जंग जैन पांचमुख संगसैन षटमुख रंगनैन सात मुख सम २१ ॥

दो० शूर्पनखा निज बहिनको पति हति रण बलवान।
तेहि खरदूषण सौंपिद्यि जन स्थान अस्थान २२ ॥

चौपाई ॥

एक समय आयो कैलाश। चढ़ि पुष्पक उर पूरि हुलास ॥ करतें लीनो शैल उठाई। जिमि पंकज मधुरा गज कुलराई २ ॥ इक करतें दूजे कर लेत। कंदुक खेलत बुद्धि निकेत। देखितासु बल सुर सिरमौर ॥ वरणहिं या सम बली न और २४ ॥

दो० राजत राजत शैल सो लीने निशिचर नाथ।
तौलत है अघपुंज मनु पुण्य पुंज लै हाथ २५ ॥

चौपाई ॥

तब सकोप हरचरणदबायो। दबि निशिचर पतिशोर मचायो ॥ रोवतजानि दयाल उदार। रावण नाम कियो हरि भार २६ ॥ पंच वदन पदपैं दश बदन। लोटयो तबहिं महामद सदन ॥ सोरावण सब जगत सतावन ॥ इमिलहि नाम लख्योभय छावन २७ ॥

उपेंद्रवज्रा छंद ॥

निहारिकै रावण के प्रतापैं। डरेसबै देवकरें विलापैं ॥ विरंचि तें जाइ कथा बखानो। ड़र्‍यो सुराजैं दश शीस जानी २८ ॥ तबै सबै संगलिनाय ज्ञाता। तुरंत वैकुण्ठगए विधाता ॥ प्रणाम कै नाम समेतरूरे। करत्त भे अस्तुति प्रेमपूरे २९ ॥

नराच छंद ॥

जगन्निवास यों निवास तीन लोकके पती। मुकुंद इंद्र नासकारि कंसहा महापती ॥ कृपाल पाहिपाहि चाहि कै कृपाहि कीजियै। सदाहि दाहिनै सबै अबै निबाहि लीजियै ३० ॥ अनंतरूप आयबुद्धिवंत विश्वकन्तहौ। सदाइ संतईश लोकआदि मध्यअंत हौ ॥ प्रवीणतीन नयन पूज्य दीनदुःखनाशियै। दयाल देवपालदेवपैं दयाप्रकाशियै३१ ॥ खगेश केतुपुण्य सेतुश्वेत रूप सोहने। सुजान भक्त हेतु रूप लेतु आपहौघने ॥ सरोज शंखचक्रपाणि मोददानिसांवरे। विशेष शेषसैन सो हरे। कलेशरावरे ३२ ॥ स्वयंभु संभुशक्र से सदाहिं पैर पूजहीं। जसै पुराण गावते सुपार पावते नहीं ॥ अनेक कोटिब्रह्म अंडरोम राजते। निहारते मदै भटै कुताप पाप भाजते ३३ ॥ विराट हौ समस्तलोक रूप देव योपते। हिरण्य नैन आदि दुष्ट आपुने सबैहते ॥ अबै दसास्य दुष्टकों मनुष्यहोय मारियै। मुरारि धारिकै कृपा सुरानकों उबारियै ३४ ॥

दो० दीनवचन सुनि सुरनके दीनबंधु सुरकान्त।
बिधिहरतें बरण्यो सबै रावण बधबिरतान्त ३५ ॥

चौपाई ॥

तब बिधि शंभु परशि प्रभुपावन। लगे सुरन कों कथा सुनावन ॥ रविकुल अजसुत दशरथभूप। अहैं अवधपुरपुण्य स्वरूप ३६ ॥ परम प्रवीण विदित पुरतीन। धीरधुरीन धर्म आसीन ॥ एकचक्र महिवरतत राज। शक्रसखा नरवरसिर ताज ३७ ॥ दशरथ नगर अयोध्या जौन। कौनसुकवि छबि बरणै तौन ॥ जोपुर बाहर गोपुर चार। जहं सो देखिय रुचिर बजार ३८ ॥ तिनमें नवरत्नके काम। बने विश्वमन हरअभिराम॥ परम तुङ्गलागे आकाश। करिपरकाश करत तमनाश ३९ ॥ ते मनु रत्न सानु के सानु। राखिलाइ भानु कुल भानु ॥ किधौं सुर श्रम मोचन काम। बिरचे नृपति चारि बिश्राम ४० ॥

दो० भीति हीरकी सोहती पन्नन की बर जोति।
दिननिशिरविशशि तेजसों जगमगनगरीहोति ४१॥

कवित्त॥

धरम धरन चार बरण बसत बढ़ो घरन घरन सोभा मनुज समाजकी। बरण बरण आभरण दरशत सरसत पट चारु छाई छबि पुर साजकी॥ गिरिधर दास हय गय कुल संकुल विपुलमति मोहै सुर राजहूके राजकी। देखि धन राजी राज राज पुरी लाजी ऐसी राजी राजधानी राजी नरराज राजकी ४२॥

दो० तेहि पालत अज आतमज अज सम बिज्ञ बिनीत।
सत्य संध बल सिंधु बर धरे धरम नृप नीत ४३॥

कवित्त॥

एक रदसम एक मंगल स्वरूप दोय रदसम दोय लोक रूप गौन यो अनूप। त्रिपुरारिसे त्रिलोक मान्य चारि भुज सम चारि बेद ख्यात पंच मखि पंच सुख रूप॥ षट सुख सम खट ऋतु जय शील सप्त ऋषि सम सप्त द्वीप पूजे पाटि पाप कूप। अष्ट सिद्धि सम अष्ट याम सोहैं नौनिधिसे पूरे नौ लसत दशदिशि दशरथ भूप ४४॥

दो० कौन कहै अवधेशको गुण प्रताप यश भाग।
आपु बिष्णु जनमेजहां करिवपु चारि विभाग ४५॥

कवित्त॥

परम प्रताप भूमि भारती मैं धाप आप भारती लजै कहत गुण समरथको। तेज देखि लाजकों लहत ग्रहराज रूप देखि कै अनूप मोहै मन मन मथ को॥ गिरिधरदास नीत विद्या बीच प्रीत नित सरस सिंगार है पुनीत पुण्य पथको। भनु मनोरथ होत विरथ फिरत जहां जै अरथ दिशि दशरथ दशरथ को ४६॥

दो० सो नृप सुतहित बोलिकै ऋषि श्रृंगिहि निजधाम।
यज्ञ करत सरवज्ञ तित बिष्णु होहिंगे राम ४७॥
कौशल्या अरु केकई सहित सुमित्रा स्वच्छ।

पटरानी हरि चारि वपु तित ह्वै हतिहैं रच्छ ४८ ॥

चौपाई ॥

तुम सब प्रभु सहाय के काज। होऊ धरा कपि रिच्छ समाज ॥ रिच्छ रजासुत शक्र कुमार। बालि होय बानर भरतार ४९ ॥ सूरज पुत्र महाबलसींव। बाखी बन्धु होय सुग्रीव ॥ बालि सुवन अंगद बलवान। पवनपूत होवै हनुमान ५० ॥ अग्नि कुमार नील बलधाम। विशु करमा नन्दन नल नाम ॥ द्वै अश्वनी कुमार कुमार। मैंद द्विविधि बानरभरतार ५१ ॥ बिधिको अंश होइ मतिमान। जामवंत सब रिच्छ प्रधान ॥ इहि बिधि होऊ धरणि सबदेव। तब हरिनर ह्वैहैं बरभेव ५२ ॥ इमि सब सुरमुनि सहित अनन्द। भेगोपुच्छ रिच्छ कपि इन्द ॥ महा बेग बल बीर्य शरीर। गिरि रण करण धीर धरबीर ५३ ॥

दो० कोटिन कोटि असंख्य भट सातद्वीप बियाम।
तिन सबको पालत भयो बालि महा बलधाम५४ ॥

छप्पय ॥

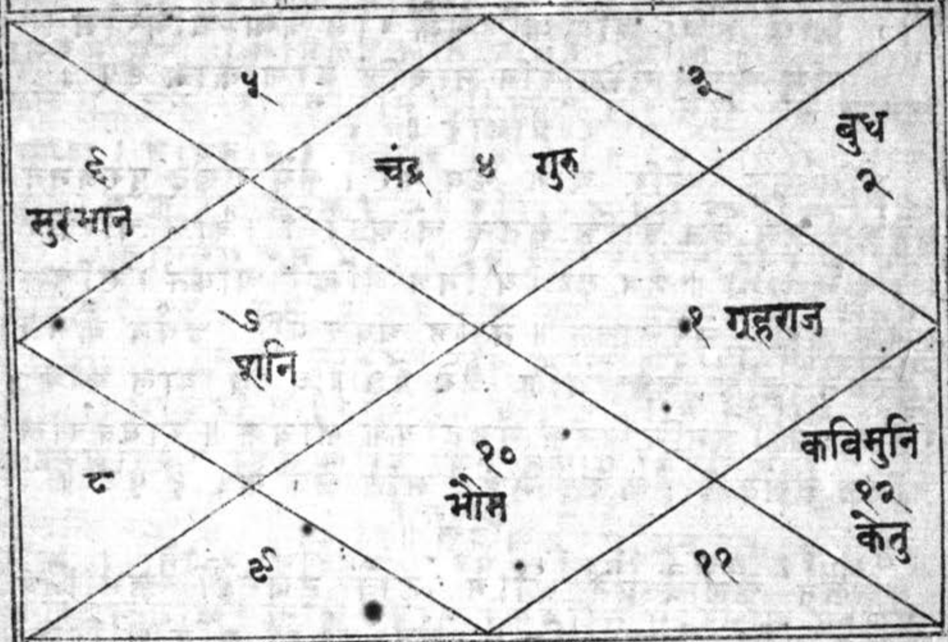
नृपहि यज्ञतें निकरि पुरुष चरुदीन नवीनो। करि प्रणाम अभिराम ताहिकर नरवर लीनो ॥ कौशल्या कौकइहिभाग द्वैकरि सो दीनो। दुहुन सुमित्रहि दियो गरभई धारत तीनो ॥ सह आकृति पावक सरिस दुतिवतीलसीं तिय रूपधर। जिमि शुद्ध फटिक संपुट धरे चंद्रकांत मणि होत वर ५५ ॥ चैत मास बरपच्छ स्वच्छ नवमी सुखकारी। जब आई गुण भरी पुनरवसु युत दुख हारी ॥ बाजेव्योम निशान पुहुप पुहमीपर बरषे। रावणको ध्वजगिरयो अमर नर बर मुनि हरषे ॥ अरि हृदय करक कारक करकलगन मध्य आनन्द भये। जन प्रेम सुर समेगरक कुल अरक अरक परगट भये ५६ ॥

कुण्डलिया ॥

मण्डलीक शिरताज गृह जनमे केशवसांच। शोधिप्रथम गृहतें लिखीचार चन्द गुरु पांच ॥ चारचन्द गुरु पांचषष्ट

सुर भानु सात शनि। आठ नव दश भौम इगारह बारह कवि मनि ॥ केतु एक ग्रहराज दोय बुध तीन कुण्डली। इमि रघुवर कौलसी रची बुध विप्र मण्डली ५७ ॥

श्रीरामजी की जन्मकुण्डली



दो० मुदित होय दशरथ कियो सुतकी जातक कर्म।
दान विविधि विप्रन दियो मूर्त्तिमन्त जिमि धर्म ५८॥

चरणा दोहा ॥

दशमीके दिनभये कैकइहि भरतपुष्यमधि चारु।
लछिमणअरुअरिदमन सुमचहिलषा लियेअवतार ५९ ॥

सो० राम जनम आनन्द बरणिसकै कबि धरणिको।
शृंगीऋषि विधिनन्द पुनि पुनि पूजत पुहुमिपति ६० ॥

चौपाई ॥

नगर अगर धूपित करवायो। बगर बगर गुलाब छिरकायो ॥ द्वारद्वार तोरणछबि भारी। कैदलि खंभ लसैं रुचिकारी ६१ तने बितान घने दरशाते। घरघर केतु अमित फहराते ॥ बाजे बजहिं रुचिर सब द्वारी। मङ्गल गीतन

गावहिं नारी ६२ भरीभीर पुरमें सबओर। होतबधाई ठौरहि ठौर॥ बारवधूनाचहिं विधि नाना। नभ अप्सरा करहिं कलगाना ६३॥ देवन दृष्टि सुमनकी करी। जयजय ध्वनि दशह्रं दिशि भरी॥ मणि माणिक रुपये अरु मुहरैं। अवध गलिन में सबथल बुहरैं ६४॥

दो० कोकबि जो छवि कहिसकै राम जन्म अभिराम।
शंभु स्वयंभु सुरेश रबि नाचहिं पूरण काम ६५॥

चौपाई॥

इमि सुत चारि चारु नृप केरे। लसे सुखद पुरजनन घनेरे॥ प्रमुदित होहिं सुतन लखिरानी। बाल चरित्तर भवन भुलानी॥ जब दशरथ निज मन्दिर आवत। सहित सनेह कुंअर उरलावत॥ तबहि अवधपति हर्षत कैसे। निरधन लहि चिन्तामणि जैसे ६७॥ करत बाल लीला रघुनायक। जननि जनक मुददायक लायक॥ राघवबाल चरित सुखदाई। कहत महत मति शेष लजाई ५८॥

कवित्त॥

खेलन खेलावैं घने औरन पढ़ावैं दुलरावैं बहुभांतिन लुटावैं मणि चित्त चहि। अंगन लगावैं उठि शारिका बुलावैं फिर फिरकी फिरावैं औबजावै तारी सुख गहि॥ गिरिधरदास महारानी दशरथ जूकी भागनसों पूरी रूरी जिनसों न और महि। अंगना समाहिं फूली अंगनालै सुत तिन अंगना के भागकों भुअंगना सकत कहि ६८॥

दो० नाम करण विधि सुतकियो बड़े राम अभिराम।
भरत लखमण शत्रुहन क्रमसों बल बुधिधाम ७०॥
करन वेध चूड़ा करन समय समय नृपकीन।
प्रीत सहित उपवीत कहं गुरु वशिष्ठ वरदीन ७१॥

चौपाई॥

बड़े भये नरराजाकुमार। विद्यावन्त सुशील उदार॥ सबमैं राम अधिक गुणवन्त। सेवैं पितहि हरिहिं जिमि सन्त ७२ चढ़ि चढ़ि बाजि चपल सबभाई। जाहिंसिकार

विपिन सुखदाई ॥ गज आसीन फिरहिं पुरमाहीं। रथ चढ़ि चारु तमासे जाहीं७३॥ देखि देखि पुरवासीलोगा। प्रमुदित होहिं दूरिकरि सोगा ॥ निरखहिं सब रघुवर मुख ओर। शरद शशिहि जिमि चहै चकोर ७४ ॥ व्याह योग सब निरखि कुमार। दशरथ मनमें करत विचार। इतनेहीं में नृप के द्वार। आये विश्वामित्र उदार ७५ ॥

दो० खबरकराई भूप ढिग मुनि गुरु सहित महीप।
आइ चरण बंदत भये मिले बिप्रकुल दीप ७६ ॥

चौपाई ॥

गृहले जाय पूजि बैठाये। पूछत कुशल प्रश्नमन भाये॥ आवन हेतु कहिय मुनि भारी। शिर धरि आयसु करूं तुम्हारी ७७ ॥ बोले मुनि मारीच सुबाहू। दोय दुखद हैं निशिचर नाहू ॥ करहिं यज्ञ विध्वंस हमारो। तातें हम बल चहत तुम्हारो ७८ ॥ रामहिं हमै देहु लैजाहिं। तिन्हैं मारि ऐहैं तुमपाहिं ॥ सुनिनृप महाखेद बसभये। सोलखि सुमुनि रोष सोंछये ७९ ॥ तब वशिष्ठ भूपहि समुझायो। विश्वामित्र प्रताप बतायो॥ सुनिनृप हृदयअतिहि आनंदे। राम लषण दै मुनि पद बंदे॥ नृप कुमार कटि कसिधनुधारे। कौशिक मुनिके संगसिधारे॥ परम प्रताप न जाइ बखानो। रूप निरखि रति रवन लजानो॥ ८१ ॥

दो० आगे मुनि पुनि रामजू पाछे लषण उदार।
मनहुं शांत अरु वीर के मध्य जात सिंगार ॥ ८२ ॥

तोमर छंद ॥

पहुंचे तपो बन जाइ। निवसे तहां रघुराइ ॥ पुनि ताड़िका कहं प्रात। निरखी भयंकर गात ८३ ॥ मुनिराज आयसु पाइ। धनुतानिकै रघुराइ ॥ हरतेभए तियप्रान। रघुनाथ धर्म निधान ८४ ॥ तब तुष्टबिप्र प्रवीन। सब अस्त्र रामहिं दीन ॥ तेहिलै लसे रघुनन्द। जिमिधार दीनिशि चंद ८५ ॥ पुनिराम लैसंगविप्र। निजधाम मैं गए छिप्र ॥ तहंयज्ञ को समिसाज। करिबे लगे मुनिराज ८६ ॥

दो० यज्ञ धूम नभ लौं गयो लखि निशिचर गण आइ ।
मांस रुधिर वर्षण लगे जहं रच्छत मुनिराइ ८७ ॥
सो० तब रघुबर धनु तानि बधि सुवाहु सह अपर खल ।
मारीचहि पहिचानि सिंधुपार मार्‍यो प्रबल ८८ ॥

चौपाई ॥

इमि मुनि मखकी रच्छा कीनी । कौशिक प्रमुदित आशिष दीनी ॥ तहं मैथिल के आए दूत । बोलन हेत विप्र मति पूत ८९ ॥ तबन्हप सुतन संग निज लीने । मुनि मिथिलाहि चले रंग भीने ॥ मगमें रामलखी सुरसरी । भूमि मालसी भित दुति भरी ९० ॥ करि प्रणाम पूछ्यौ इतिहास । विप्र वारो सब कथा प्रकास ॥ गंगा पार होइ छबि छाए । मुनि वर गौतम आश्रम आए ९१ ॥ तहां शाप सों गौतम नारी ॥ शिलारूप रघुनाथ निहारी ॥ सुनि सब कथा सुनाई तासु । प्रभुपद परशि नारि भइ आसु ९२ ॥ रामचंद्र की पूजा कीनी । आशिष विविधि भांति सों दीनी ॥ तबह्वै बिदातहां सोमुनिवर । मिथिला पुर पहुंचे आनन्द घर ९३ ॥ जनक सुन्यो मुनि कौशिक आए । चले मिलन हित आनन्द छाए ॥ सतानन्द सानन्द सुहाए । जाइ मिले सब अति मन भाये ९४ ॥ कुशल प्रश्न करि पूछेउ भूप । किनके सुत यह रुचिर स्वरूप ॥ मुनि बोले ए अवध निवासी । दशरथ सुवनअहैं गुण रासी ९५॥

दो० तबहिं प्रसन्न विदेह जू सहितनेह गुण गेह ।
राम कुशल पूछत भए बरसि नयन घन मेह ९६ ॥
विश्वामित्र प्रताप कों रामचंद्र सों तत्र ।
सतानन्द बरणतभए सो जाहिर सरवत्र ९७ ॥

चौपाई ॥

तब न्हप मुनि न्हप सुतन्ह लिवाइ । गए यज्ञ मन्दिर हरषाइ ॥ तहं मुनि लख्यो सभा को साज । कहत भारती पावत लाज ॥ ९८ ॥ तोटक ॥

सब देशन के न्हप सोहत हैं । धनु शंकर को गुरु जोंह-

त हैं॥ भरि जोरन ताहि उठावत हैं। न उठै तबहीं फि-
रि आवत हैं ९९॥ सबके बलकों हरिचाप लसै। अंगुरी
भरिहू नहिं नेकु टसै॥ जितने महिपाल गने महिमें। समुझो
सब चित्त बली नहिं मैं. १०० तहं बाण दशानन आवतभे।
लखि चापहि चाहि उठावतभे॥ बिशिखासन नाहिं चलो
घलसों। जिमि शैल समीर महा बलसों १०१॥

दो० बाणगयो घरकों पितव रत्न गह्यौ कोदण्ड।
महा जोरकों करत श्रमभस्यौ गिस्यो महि चण्ड१०२॥
पुनि संभ्रम ह्वै लाजगहि चल्यो लंककी ओर।
निरखि सबै कहिबे लगे दै तारीकरि शोर १०३॥

कवित्त॥

तृणसम समुझि सकल दिगपाल यमकालहूकों तुच्छकै
करत निज मनकी। शंभुके पहारकों उठाय गरबायो अति
आयो धनु तोरिबेकों किये मतिपन को॥ गिरिधरदास
भनै भागो जैसे चोर देखो दबि बनकीओर अबै चेतहू नतन
को॥ नाक सैन सागर मथन महा नाक आज काटी है
पिनाक दशो नाक दशानन की १०४॥

दो० इमि भूपन के कहत तित कौशिक आज्ञापाय।
उठि झटि झांसि रघुरायजू तोस्यौ धनुष उठाय १०५॥

छप्पय॥

मण्डल करत अखण्ड तेजमहि मण्डल पूरो। मनु रबि
आतुर फिस्यौ चक्रसम भ्रम भरिकूरो॥ व्याल बाल मिर-
नाल माल जिमि तोरिपवारै। तिमि तोस्यौ हर चाप आप
रघुवर तेहि बारै॥ परचण्ड शब्द महि मण्डल लखि रूप उदण्ड
आचरज महं। कोदण्ड होत दोउ खण्ड ब्रह्मण्ड हलो नव
खण्ड तहं १०६॥

सो० अतिहि मुदित मिथिलेश मुनि बर पद बन्दन कस्यौ।
लहि निज जनक निदेश सिय पियहिय माला दई १०७॥

दो० सुरन बजाई दुंदुभी भाजर पटह निसान।
नाचन लागीं अपसरा चढ़ि चढ़ि ब्योम बिमान १०८॥

चौपाई॥

मंगलमहा जनकपुर छायो। नृप दशरथ ढिगदूत पठायो॥ सुनि सो समाचार कोशलपति। सभा समेतभये प्रमुदित अति १०९॥ गुरुपद वन्दि बूझि कुशलात। आशुहि चले साजि बरियात॥ संग वशिष्ट शिष्ट नृप इष्ट। भरत शत्रुहन गुणनि वरिष्ट ११०॥ गज रथ तुरंग बिबिधि छबिधारी। बाजन सकल बजैं रुचिकारी॥ नहिं बरियाति कांति कहि जाई। लखत नैन सुख कहत ठगाई १११॥

कवित्त॥

चौथतें बरात आई जनक नगर नृप बगर लगाई खान पानन की सट्टियां। गिरधरदास अस ऐसो बाटहि सजाई जाके ठाट देखि लागैं देवपुर बाट घट्टियां॥ केवरा गुलाव वारि चोर छिरकाये चारु होत वार नारिन को नाच दोऊ पट्टियां। सोसनीही रोसनी कराई नैन तोसनी सुकोसनलौं रोसन कै सोसन की टट्टियां १२॥

दो० जनकराय दशरथ मिले भयो परम आनन्द।
रामलषण पितु पदगह्यो धरणप्रतापअमन्द ११३॥
गौतम गाधि बिरंचि के सुतन कियो परणाम।
राम चरण वंदे भरत शत्रु दमन अभिराम ११४॥

सो० चारऊ बन्धु उदार मिले परस्पर मोदि जिय।
उतरे भूप अगार सह बरात हरषात हिय ११५॥

चौपाई॥

प्रेम परस्पर कह्यौ न जाई। इतहि जनक उत दशरथ राई॥ चारऊ बन्धु व्याहको साज। साजऊ कहत भये द्विजराज ११६॥ शोधि लगन मन मगन महीसुर। पाणिग्रहणकी खबर करीतुर॥ सुतनसिंगारिमौर शिरराखि। चलेआसु आनन्द अभिलाखि ११७॥ तेहिक्षण तहां व्याह के हेतु। जनक अनुज आये कुशकेतु॥ ताइ सबै राजे अभिराम। शोभित भयो जनक को धाम ११८॥

हरिगीती छन्द ॥

भयोधाम शोभित जनक को लखि कनक को वरवनक को। गत कांति होवै नाक में सुर पुर लखै तेहि तनक को ॥ तोरण कलशधुजमाल भूषित अतिअदूषित राजतो। गावहिंसुहागिनि गीतमंगल विपुलवाजन बाजतो ११९॥ मंडप मनोहर महत अहंवेदी दुरित भेदीबनी। मनिचौक करो रुचिर पूरो परम भांति सुहावनी ॥ द्विज पढ़हिं वैदिक मंत्र आशीर्वाद बिबिधि प्रकार सों । सरदार भु भरतार मोहहिं सभाचारु कतारसों १२० ॥ सीता सनेह विदेह तजविदेहनै रघुबीरकों। यहमम सुता तुमलेहु कहि करसों दयो करनीर कों ॥ तेहि काल तहं अति मुदित चित सुमनस सुमन बरषतभये। नरनाग किन्नर विप्र मुनि हरि भक्त हिय हरषत भये १२१ ॥

दो० दई भूपसी भूरि न्रप भूमि द्विरद मणि दाम।
यांचक किये अयाच सबलखि भांवरि में राम १२२ ॥
भरत लषण रिपुदवन हूं होत भये सहदार।
सुत पौतन सह दशरथहि दई जनक जेवनार १२३ ॥

चौपाई ॥

विविध प्रकार किये पकवान। षट रस व्यंजन स्वाद महान ॥ तहं जेंवत कोशलपुर भूप। हरषत परसत जनक अनूप १२४ ॥ तेहि क्षण मिलि सब मैथिल नारी। रामचन्द्रकहं गावहिं गारी॥ बाजत ढोल म्रदंग मंजीरा। बनी बाल पुलकित दृग नीरा १२५ ॥

अडिल्ल ॥

राम चन्द्र पर ब्रह्म तुम्हें गारी कहा। सुनियत बेदन बीच चरित तुमरे कहा ॥ माया कों जनमाइ रमण तासों कियो। अब ताही के उदर जनम शुभ मैं लियो १२६ ॥

दो० तुम अज दशरथ के भये वै अजके दशरथ्थ।
मेटहु यह संदेह मम रामचन्द्र समरथ्थ १२७ ॥

बरवा दोहा ॥

बिस्वामित्र बशिष्ट बैरतें द्विज तपकरि भये चित्र ।
तुम्हरे कुलगुरुबीरजदह्यो क्योंन कहावतविप्र १२८ ॥

दो० एककहै तुमने कियो भलोकाम नरनाह ।
जोयह जनककुमारिसों अपनो कियोविवाह १२९॥

सो० हंसिबोलो इकबासपरमहंस दशरथ भये ।
या पल जाये राम करालात जामातकी १३० ॥

छप्पय ॥

तुमरे पुरुषाभये भूप इच्वाकुमहाबल । तिन शुभसाइत शोधि अवध विरची नगरी भल ॥ ताको करिकै भोगआयु पुनि सुतको दीनी । इमि क्रमसों दशरत्थ बाई नगरी कहं लीनी ॥ इक अचरज जाके पतिइते हइहोय तजिगे बर्नानि । बहनई अजहूं तेहिकौनकी कहियनारि काकोजननि १३१॥

दो० एककहै मिथिलेश को भूलि न जायेहु राम ।
नातोराखेहु जनकको सुखहिं कह्यौ सतधाम १३२॥
कौशल्या के परमप्रिय जनक तुम्हारे राम ।
इनबिनु तलफतहोहिंगी क्योंतजि आयेधाम १३३ ॥
राम तुम्हारे जनक जग दशरथ गजहयवंत ।
सबदिगपालन के सरिस सब बसुधा के कन्त १३४ ॥

अडिल्ल ॥

पुरुषादक को वंशकहै अजको कोऊ । आरण्यक कोवंश सांच सुनियत सोऊ ॥ शंखनके कुलप्रकट आपु गुरुनेकही । असमंजस को बंश राम तुमरो सही १३५ ॥

दो० एककहै रघुरायजू जनकयोग दोउ बंधु ।
जाहि चहै जियसों सोऊ तासों होयसबंधु १३६ ॥
जाके पति तुमरोपिता सो तुवलागी कौन ।
ताकी तनया तुमवरी राम धर्मके भौन १३७ ॥
एककहै बैठे दोऊ कौशलेश मिथिलेश ।
कोइनमें सांचो जनक भटहु राम अंदेश १३८ ॥
राम अवधबासी सबै दशरथ सहित सनेह ।

जनकजनक जनकहत तवसकुचत समुझि बिदेह १३९॥
इकका कैकइको अहै सबसों सुजत अपार।
भरतै जोनजाइकै मानत अपुन कुमार १४०॥

चरखा दोहा॥

एककहै संदेह हरऊइक रघुकुलके अवतंस।
केवल खीरहिसों जनमेकैकऊ रानऊको अंस १४१॥

चैापैया छन्द॥

मख बाहर कढ़िकरि कारसित चरुबलि देव लपैदइयारी। सुनियत तेहिलैकै भोजनकैकै गर्भवती भईंनारी॥ कारेअरु गोरे जन्मे छोरे किमि यहभेव न जानौ। लागी परछाहीं कै यह नाहीं सो निरधारि बखानौ १४२॥

दो० तुव नानीके पति भरत कैकयहै जगमाहिं।
तबहिंकैकई सरिसतिय अपरऌपहि भियनाहिं १४३॥
च०दो० भरत मातकैकईकिये पतिदशरथ अग्रमहीप।
जीतिलई गनिकैसुचालिसों नारिवृन्द कुलदीप १४४॥
दो० एककहै लक्ष्मण जननि सुनी सुमित्राकान।
तिनको कौन सुमित्र है जासु गौर सन्तान १४५॥

चौपाई॥

इमि गारी गावहिं पुर नारी। जेंवतऌपहि बढ़्योरस भारी॥ उठिआचवन कियोनरनायक। बीरादियो जनक सबलायक १४६॥ दशरथ मैथिल मिले सुहाए। लखिसब जनकेनयन सिराए। मनऊं प्रेम अनुराग मिलत हैं। लखि लखि शत्रु भए दुतिहत हैं १४७॥ रामहिं बोलि सासु पग लागी। बड़भागीअतिही अनुरागी॥ राम तुमहिं दीन्हीयह दासी॥ नित रहिहै अनुगत छायासी १४८॥ ऐसे कहत उमंगि दृगआए। गद गद कंठ बचनरस छाए॥ सोहत सुन्दर दुलहा दुलही। बढ़ी दरश कीचाह अतुलही १४९॥

हरिगीतिकाछन्द॥

ही अतुल बाढ़ी चाह दंपति निरखि चारऊ भातकों। त्यांगी न खह जामातु जेहि तेहिदै दई मातुकों॥ नरि

बहु निछावरि आरती आशिष अनेकन बिधि दई॥ जो
दाइजो मणि कनक गज इभि सो बरात बिदाभई १५०॥
अवधेश पूजि विशेष जनक नरेश निज मन्दिर गये। जहि
के निदेश द्विजेश को निज देश नृप चलते भये॥ तेहिकाल
कौशिक जात लखि महिपाल सिर पदपैं धरो। प्रभु तब
छपा यह दिवस मोहिं बिरभापमैं आयौं खरो १५१॥
दो० दै आशिष कौशिक गये अवध चले नर नाह।
अतिआंधी विपरीतितहं उठीव्योमतें राह१५२॥
सो० खग मृग भगहिं अमन्द व्याकुल बरियाती भये।
इतनेहिं में भृगुनन्द आइगये अति रिसिमये १५३॥

छप्पय॥

धीरवन्त बरवीर दृगन अति रौद्र बनाये। अद्भुत द्विज
जग ख्यात शंभु धनु करुणा छाये॥ कारन समर वीभत्स
परन कहंपरस भयानक। सकल सूर सिंगार वचन बोलत
जिमि आनक॥ जिन हत्यो हैहयहि हास्यही दरशे दुति
सरोस यम। लखि शान्त कारन मुनिवर चले नौरस तन
धर शान्त सम १५४॥
दो० दशरथ चारहु सुत सहित जाय कियो परनाम।
सबैसभै देखहिं खरे कहा करैंगे राम १५५॥
सानुज रामहिं दशरथहिं दै अभीस भृगुनन्द।
करि परणाम वशिष्ठकों बोले वचनअमन्द १५६॥

कवित्त॥

कौन नृप नीचने जनक पुर बीच कियो कुतसित कर्म
ऐसो धारिकै निडरता। तोस्यौ सो पिनाक जाहि पूजैं
नाकपाल आदि राख्यौं बहुकाल सौं विदेह भूमि भरता
गिरधरदास भये सक्र ह्व सभाकै अज्ञ काहू नाहिं वास्यौ
वेग धारिकै सुघरता। जानै गरधर को परशुमै भिजाये
आज ताके गरधरको परशु भिन्न करता १५७॥
दो० सुनि हंसि बोले रामजू नहिंमैं तोस्यो नाथ।
परम पुरानो आपुही टूट्यौ छुवतहि हाथ १५८॥

चौपाई॥

तब अति कोपि कहत भृगुनायक। कैसो कहत वचन चलिलायक॥ करि अपराध बनत है साधु। परन चहति तो शीस उपाधु १५९॥ सो सुनि भरत कहत मुसुकाई। विप्रन्हि सुनिये छमा बड़ाई॥ टूट्यौ धनुष सहाय हमा-मुनि। जासु भवन भवितव्य प्रबल गुनि १६०॥ सो सुनि महा रोससे भरे। बोले रामलाल दृगकरे॥ यहअति ढीठ निदरिमोहि बोलै। नहिं निजमहं अपनेकहं तोलै १६१॥ आजु काटिशिर भूमिगिरावों। बालक बूझि न चित्त चलावों॥ तू हठिकर सनमुख अपराधी। तेहिबाधिजाउं काज निजसाधी १६२॥

दो॰ मुनिबकोरि बोले भरत अपराधी हम सर्व।
बूझिपरै जो तुमहिं तेहि बधहु विप्रगहि गर्व १६३॥

चौपाई॥

लषण कहत मुनि सांच सिपाही। देखियत धनुष बाणकर जाही। तातें कहहिं वीरसी बानी। उचित वेषसों चत्रिय यक हानी १६४॥ तब शत्रुघ्न कहत भे ऐसे। जों मुनिसूर जटां शिर कैसे॥ सब सिंगार तापस को अहै। रण हित धनुष बाणकर रहै १६५॥ औसउ भेष करे द्विज रहैं। सब बधि पूजनीय मम अहैं॥ तब रघुनाथ कह्यो शिरनाई। जानत हम सगरी प्रभुताई १६६॥ बालक होय बिगारै काज। तापर चहिय दयाद्विज राज॥ सो तुम अपनी ओर निहारि। जैये निज गृह ओर सिधारि १६७॥

दो॰ तब सकोप भृगुपति कह्यो तुमसब एक समान।
कहत बचन अतुतुच्छ सों है निपटहि अज्ञान १६८॥
इकइस बार निक्षत्र करि दई विप्रकहं भूमि।
सोइ समप्रण तुमरे करत आवनचाहत घूमि १६९॥

सो॰ इमिकहि परशु उठाय चलतभये भार्गव कुंअर।
लखि दशरथ शिरनाइ करीबिनयबहुजोरिकर १७०॥

चौपाई ॥

बोले राम भूपलखि तोहि । कछुक दया उर आवति मोहि ॥ सुनिपुत्रन के वचनकठोर । मारन चहत परशुनि-अघोर १७१ ॥ तब लक्ष्मण बोले यहबात । का गुनि मुनि मारत रहि जात ॥ जौं ऐसिहि ते जीरण रही । इकइस बार जीति किमि लही १७२ ॥ कितो बनाउ करौ मम पाहीं । बिन जची जचोपन माहीं ॥ हेरि फेरि आवति दुजताई । वचन वज्र करनी रिजुताई १७३ ॥ तातें क्यों कहि कोप बढ़ावो । भरत पाय हम धाम सिधावो॥ तुम-कहूं तो कहि परशु उठाय । गुरुसों उऋण भये द्विजराय१७४ ॥
दो० सो सुनितहं अति कोप बसबक्रि सुधारि कुठार ।
बोले प्रज्वलितअग्निसे बरयमदग्निकुमार १७५ ॥

सवैया ॥

आजुहि चौधि उलट्टि सबै दशरत्थ के राजु बसाइ कै भूतन । रामहिं नाशिकै बन्धुन के सह सौंपि अबै जनकै जमदूतन ॥ बाइसई बिरियां बसुधाकहं बिप्रनदेहौं निछ-त्रकैहूतन । मेटिकला मजबूतन की क्षणमें मिलवों रज में रजपूतन १७६ ॥
दो० सुनि बशिष्ठ बोलत भये बरजि बालकान बैन ।
क्षमा करहु नृप शिशुन पर बिप्र क्षमाके ऐन१७७॥
सो० कह भृगु सुत तुम नाथ पूजनीय सब बिधि अहो ।
सो करिहौं धरिमाथ जो मोकहं आयसुकहौ१७८॥

चौपाई ॥

हैं यह कुटिल भूप के छोरे । करि अघ बचन कहहिं बिष बोरे ॥ तातें लखि कुठार की ओरै । अस मन होत सबन शिर तोरै १७९ ॥ शत्रु दमन बोले अति कोही । जौं रिसि होति कुठारहिं जोही ॥ तौन दोष कछु अहै तु-म्हारो । परशुदोषते कटुकउचारो १८० ॥ तौ अस कुटिल कुठारहि बिप्र । दूरि करहु कलंक बरक्षिप्र ॥ सुनि मुनि कहा परशु यह सोई । सहस बाहु भुज छेदक जोई१८१॥

यातें अखिल भूमिपति मारे। सो आयो शठ पासतिहारे। करि अब रुधिर पान तवगरको॥ छोड़िहि त्वम वैर लै हरको १८२॥ तव हंसि राम राम दिशि हेरो। कहत विप्र मोहि जानहु चेरो॥ छत्री सम जब वचन बखानत। तब कछु कोप भूप सुत आनत १८३॥

दो० लघु धनु तोरन दोषतें उचित न ऐसो रोस।
नहीं कलकारी चोरको प्राणलेहिं बुधिकोस१८४॥
परशुराम कह हर धनुहिं लघु धनुकहत कुमार।
तो यह हरि धनु लेहु तो जानहु सूर अपार१८५॥

सो० सुनि प्रभु लीनो चाप डोरी ऐंची शरधरो।
मुनिलखि अतुलप्रतापबिष्णु जानि चरणनपरो१८६॥

वसुकला॥

पुनि परशुराम। बर बुद्धिधाम॥ कर जोरि बैन। बोले सचैन १८७॥

भुजंगप्रयात॥

रमा वल्लभं राघवं जानकीशं। कृपालुं दयासागरं भूपतीशं॥ प्रभुं पंकजाक्षं परेशं गुणज्ञं। भजेवेदवेद्यं शुभं दिव्यसज्ञं १८८॥ मुकुंदं मनोज्ञं महांतं सुरेशं। अयोध्येशकाकुत्स्थमीशं परेशं॥ सदाभक्तभावैक गम्यं नरेन्द्रं। गुणागाररूपं भजे कौशलेन्द्रं॥ १८९॥ प्रभुं सच्चिदानंदरूपं खरारिं। शुभं मंगलं शोभनं रावणारिं॥ सुमित्रात्म जानंददातार मीशं। भजे मैथिलेशार्चितं मैथिलीशं १९०॥ त्रिनेत्रार्चितं लोक पूज्यं महांतं। त्रिलोकेश्वरं चारुबैकुंठकांतं॥ सदा चाप हस्तं मनोज्ञाभिरामं। नमामीश पूज्यं परं लोकरामं १९१॥ वरेक्ष्वाकु वंशोद्भवं कौशिमित्रं। भजे भार्गवं शिंशं पवित्रं॥ शुभं सूर्यवंशीय मानंद रूपं। भजे बाण पाणिं प्रभुं लोक भूपं १९२॥ अहल्या र्चितांघ्रिं सुरेशं रमेशं। सदा नंदरूपं गुरुं राघवेशं॥ मुनींद्रा र्चितं गोपतिं युद्धधीरं। भजे भाग्यवंतं विभुं रामबीरं १९३॥ कविं कुंभकर्णांतकं कौशिकेशं। हरिं दूषणारिं सुरारिं धरेशं॥ कबंधांतकं केशवं कंजनाभं। भवं

योगिबंधुं भजे भास्कराभं १९४ ॥ सरोजेक्षणं माधवं विश्व-हेतुं । अयोध्याधिपं प्रज्ञपक्षींद्रकेतुं ॥ महानन्द मूर्त्तिं विभुं वीत तंद्रं । भजे जानकी जीवनं रामचंद्रं ॥ १९५ ॥

दो० इमि अस्तुति करि राम पद बंदि गए भृगुराम ।
मुदित उदित रविसे नृपति आए सुतसह धाम १९६ ॥

चौपाई ॥

बाजत मंगल बाजन नाना । घरघर सुन्दरतने बिताना । गावहिं गीत सकल पुर नारी । आए ब्याहि राम व्रत-धारी १९७ ॥ कौशिल्यादि मुदित नृपरानी । करहिं आरती अति हरषानी ॥ कीनी बहु रमासी चारु । नेवछावरि करि मणि धनहारु १९८ ॥ दिये याचकन नरपति दान । रथहय तुरग भूमिसनमान ॥ अति आनन्द भयो पुरमांहू । सुतन ब्याहि आए नर नांह १९९ ॥

दो० भरत शत्रुहन संग लै गए युधाजित धाम ।
रहे भूप दशरथ सदन प्रमुदित लक्ष्मनराम २०० ॥
सीता सीता रमण दोउ रमण करैं रस पूरि ।
शोक शमन नृप मनन मैं भरे भाग सों भूरि २०१ ॥

बरवै ॥

एक समय नृप दशरथ कीन बिचार । देउं राज रघु-नाथहिं सुखद अपार २०२ ॥ गुरुतें अरु पुरजनतें पूछेउ भूप । सबन कह्यौ यह कारज जग सुख रूप २०३ ॥ तबनर राज सुमंतहि दिएउ निदेश । रामराज कें काजहिं साजहु देश २०४ ॥ सुनत सूत अति आतुर चतुर सुजान । साजे नगर सबहि दिशि कलश बितान २०५ ॥ सुनत खबर कौशल्या हरषित चित्त । दीनो बहुत द्विजन कहं उत्तम बित्त २०६ ॥ राम बोलाए दशरथ आए आपु । निरखि पत यश पूतहि प्रमुदित बापु २०७ ॥ करि प्रणाम कहं बैठे आसु पाइ । राज होइ कल तुम कहं कहउ नरराइ २०८ ॥ कुश आसन फल भोजन मुनि व्रत इष्ट । इक दिन पहिले हौंसों कही बशिष्ट २०९ ॥ सुनि रघुबर मुनि नृप सों गत

सुख दुख। चलतभए चढ़ि स्यन्दन फल भोजन सुख २१० ॥ जोविधि बिधि सुत बरणो ताविधि राम। सैनकरी निज मंदिर आनन्द धाम ॥ २११ ॥
दो० भरत मात की इक जनी रही मंथरा नाम।
श्रवण सुनो यह काकही राजपाय हैं राम २१२ ॥
चौपाई ॥
भरतमातके ढिग चलिगई। रोय उच्चबोलति योंभई ॥ नृप छल तुम न सुना यहरानी। रामहिं सब सौंपत रज-धानी २१३ ॥ जो ह्वैहैं नृप वह धनुधारी। तौ तुमरो सुत सहहै ख्वारी ॥ सुनि कैकईप्रथम रिसिआनी। विधिप्रेरित पुनि तामति मानी २१४ ॥ पूरबके बर द्वैसो लैनो। प्रथम तच रामहिं वन दैनो ॥ दूजे बरमैं यह सब साज। तवलौं होइ भरत कहं राज २१५ ॥
दो० यह निहचै करि कैकेई जल युत करि निज नैन।
सजिकुचैल तजिआभरण कियोकोप गृहगैन २१६ ॥
चौपाई ॥
मन्दिर मधिआयेनर राई। सूनेसदन ताहि सुनिपाई ॥ कछुकविचारिगये चलितहां पुङ्ग्सीपरीकैकईजहां २१७॥ पूछेउ कारणहोइ मलीन। बचनबांधिभूपहि कहिदीन ॥ बज्र सरिस सो बर तेहि बार। नृप गिरि उरहि भेदिगो पार २१८ ॥ व्याकुलभूमिगिरेउ नृपकैसे। मरकेकटे पुङ्गमि धरजैसे ॥ समुझाई तिय भांतिअनेक। सोनिज हटतें छूटी न नेक २१९ ॥ नृपके बिलपत अति दुख दाई। कालराति सी राति सिराई ॥ भोर द्वार वन्दीजन आये। गुरु वशिष्ट नृप सचिव बुलाये २२० ॥
चरणा दोहा ॥
राम राज को साज सजो सब राजा उद्यौ न आज।
जाइ जगावहु भाषि सुमंतहि पठयोगुरु शिरताज २२१ ॥
मध्या छन्द ॥
देख्योनृप जाई। सोयोदुखु जाई ॥ सांसैंअति भारी। सोहै

सोइ नारी २२२ ॥ पूछ्यौ दुख कैसे । सोयो नृप ऐसे ॥ भाष्यो सब रानी । हैहै छलसानी २२३ ॥ जाओ तुम साथै । लाओ रघुनाथै ॥ ऐसे सुनि धायो । रामै तहं लायो २२४ ॥ देख्यो पितु जाई । रोये रघुराई ॥ माता सुखबानी । सीता बरमानी २२५ ॥

दो० पितु पद वंदि आनन्द सों गये कौशला धाम ।

सोहि बिपिन दीनो नृपति तुमहूं कहौ कहं राम २२६ ॥

राजा छन्द ॥

तब रानी । सुनि बानी ॥ दुखसानी । बिलखानी २२७ ॥

कामा छन्द ॥

सोई । जोई ॥ डोले । बोले २२८ ॥

तारी छन्द ॥

क्यों ऐसो । तू वैसो ॥ भै नाहीं । या माहीं २२९ ॥

तिन्ना छन्द ॥

भाषी तातें । जोई बातें ॥ सोई नीको । ह्वै है जीको २३० ॥

सम्मोहा छन्द ॥

राजा जो भाख्यो । सोई ही राख्यो ॥ यों पुनै जानी । रोई सो रानी २३१ ॥

शेषा छन्द ॥

बनै जाओ नाहीं । राजो धामैं माहीं ॥ जैसे राजा जाता । तैसो होंहूं माता २३२ ॥

शिष्य छन्द ॥

माता तेरी बानी सों । नाना जं सेचो जीसों ॥ पै या मैं ह्वै है पापै । तातें हौं जानो बापै ॥ २३३ ॥

विद्युन्माला छन्द ॥

सीता स्वामी भाषी जोई । कौशल्या ने मानी सोई ॥ राखो यों आरख्यै जैयै । राजा की बानीही लैयै २३४ ॥

रूप माली छन्द ॥

सीता बोली प्यारे सों बानी । जैहौं मैं हूं साथै हे नी ॥ स्वामी मैं यों गुनौंना कोऊ । जनारी कों पूजा गै तोऊ २३५ ॥

दो० समुझाई बहु भांति प्रभु सीता तज्यो न साथ।
तैसहि संग लागे लषण बरज्यो बहु रघुनाथ २३६ ॥
सो० दैद्विज गणको दान राम अनुज सोता सहित।
आये नृप अस्थान बिदाहोन बन जानहीं २३७ ॥

चौपाई ॥

रघुवर बिपिन जात लखिरानी। बिनकैकाई सकल बिल-
खानी॥ पुरजन भरेभूरि दुख मनमें॥ हाहाकार करहिंतेहि
छणमें २३८॥ कुशकेचीर कैकईदीने। तेरघुनाथ लषणकर
लीने॥ करि बन साजसबै रघुराई। जननि जनक पदशीश
नवाई २३९॥ मांगिबिदाहि चलेबनराहू। भयोसोर धिक
धिक नरनाहू॥ धिक तोहि पुरजन सुख हग वधिक। रे
कैकई कुचालिनि अधिक २४० ॥ इमि सब कहत सहत
दुखपूरे। चले राम संग पुरजन रूरे॥ गुरु के कहे सचिव
रथल्याई। सियसह बैठारे दोउभाई २४१॥

दो० सबन सहित रघुबर रथोउतरे तमसा तीर।
तहंनिशि बसि बनदिशिगये त्यागि जननकीभीर २४२॥
सो० उठेनगर जन प्रातनहिंनिरखे दोउ भ्राततहं।
नर नारी बिलखात फिरिआयेसो अवधमहं २४३ ॥

चौपाई ॥

शृङ्गिबेरपुर पहुंचे राम। निरखोगंग महा अभिराम॥
लषण सहित कीनो परणाम। आइ मिल्यो निषाद गुण
धाम २४४॥ जातिबंधु सहभेंटहि दीन। मिले आपु रघु-
नाथ प्रवीन॥ तहां कुशासनपै गुणऐन। सियसमेत निशि
कीनी शैन २४५॥ सुतहिफेरयो बहु समुझाइ। गंगापार
गये चढ़िनाइ॥ तहं सिय लषण निषाद समेतु। रहेरात
इक रघुकुलकेतु २४६॥ जाइबहोरि प्रयाग निहारो। सब
भुवतीरथ पालकभारो॥ दरशत दर्शत आनंददेनी। पाप
हरणि सुख,करनि त्रिवेनी २४७॥

दो० गंगा यमुना मिलि महाशोभा देहिंअमन्द।
नाशहोहिं अघवृन्दजहं परम प्रकाश अनन्द २४८॥

कवित्त ॥

भागीरथी भारती विराजैं भानु सुता संग लखत तरङ्ग लेशनाशहै कलेशको। सुरभूमि सुरतीन पुरकी तहाँहिं जन जाके रहिबेसों भूमिभार घट्योशेषको॥ गिरिधरदासनाम जपत अनन्द होत दुरत अमन्ददोष जंबूद्वीपदेशको। पुण्यको शरीर नीरपरस्यो समीर पापधीरहगभीरतीर तीरतीर-वेशको २४९॥ सवैया॥

किधौं सुरेसावन कातिक मेघ किहीरक नीलमणी की कतार। कि सालिगराम हैं सुक्तनमाहिं कि हंसन हन्दम यूर विचार॥ लसै सुरपांदप संगत मालयहो गिरधारन ध्यान सचार। रमापति शंभुमिले दोउ कैधौं मिली यमुना अरु गंगकीधार २५०॥

दो० करिप्रयाग मज्जनकियो बरणत तासु प्रभाव।
मुनिवरके आश्रमगये चितपइ चितवन चाव २५१॥

सो० भरद्वाज पदवंदि राम लषण सीतासहित।
अज्ञापाइ अनन्दि चित्रकूटकी दिशिगये २५२॥

दो० जाइलखी यमकन्यका यमुना श्यामस्वरूप।
मनुहरिहित श्रृंगार रस जलह्वै बह्योअनूप २५३॥

चौपाई॥

चारुदारु वेरीरचिराम। उतरिगये यमुना अभिराम॥
चित्रकूट गिरिपहुंचे जाइ। भेटेबालमीकि मुनिराइ २५४॥
लछिमनरुचिर बनाईकुटी। जामेंपंक्ति परनकीजुटी॥ मंदा-किनी निकट छविछाए। बसेरामसियसहित सुहाए२५५॥

कवित्त॥

मंदाकिनि लसी अतिउज्जलता वसोजामें मनोमघवान मोतीमाल गिरीटूटके। विटप सकल फलफूलनसों भरेहरे सतयुग के गृहस्थबसें किधौं जूटके॥ गिरि धरदास मेरे जानया महीधर में राखो विधि शोभा लोक तीनिहू की लूटके। मिलबे चरिचमित्र सुखद पवित्रकरें विहंग विचित्र चित्रचित्र कूटकूटके २५६॥

दो० मुनिगणमें मुनिवेषवर मुनिसे निवसहिंराम।
तहंके मधुपच्छो सवैग्रभुहि लखें सवयाम २५७॥

कुण्डलिया॥

पतिनिषाद को जवफिरयो रामहिं तहंपहुंचाइ। लख्यो सुमंतहि गंगतट पुरपठयो समुझाइ॥ पुरपठयो समुझाइ जाइ सो नृपहि कहीसव। मुनिरघुवर वनगवन गवननृप कियसुर पुरतव॥ माच्यो हाहाकारन दुखकहि जाततौन अति। नृपतनरखि मधितेल वुलायो भरतविप्रपति २५७॥

दो० तहं कुसपन देख्यो भरत दूतगये तेहिकाल।
मातामहसों ह्वै विदा आएनगर विशाल २५८॥
देख्योपुर आरण्य सममंगल साजविहीन।
खगमृगसव नरनारिसह दिखियत छीनमलीन२६०॥

चौपाई॥

करत विचार सोचतें छाए। तुरतकैकई मंदिर आए॥ दशरथ मरन राम वनवासा। सुनत भरत भये अतिहि उदास २६१॥ बहुविधि दूषिदई धिकारी। गेचलि जहां राम महतारी॥ परेचरण जननी उरलाए। अंक उभैवालक बैठाए २६२॥ मानहुं फिरि वनतें हरिआए। दृगि गुनिदृग जलसों नहवाए॥ सहगलानि गुनिनिज अपराध। बोले भरत जोरि करसाधु २६३॥

छप्पय॥

छेमहरण दुज वधनजनक जननी सिरछेदन। गोवध गुरु तियगवन विप्रसुर मंदिर भेदन॥ अग्निदान गरदान घात विश्वास पिसुन पनं। कृतघन साछी कूट सुरापी वन पल भोजन॥ इन आदिपाप उपपापजेते सव सोकहंहोहिं सति। परलोक कदापिन पुण्यजैं रामगए वन मोरिमति २६४॥

चौपाई॥

सुनि निरछल गुनि वोली रानी। तुम सुत जनि जिय गहहु गलानी॥ भावी प्रवल हमारो पाप। करहु जनक करनी तजितापं २६५॥ तवहिं भरत गुरुआयसु लीन्हो।

विधिवत क्रिया भूपकी कीन्ही। जनकहि जोइ स्ततकमति रोए॥ हमहिं पठाय आय इतसोए २६६॥ दुनि बहुवि-लपत भूप कुमारू। करि सबकृत्य सुद्ध भये चारू॥ सानुज बैठेकरत विचारू। आवत लखी कूबरीदारू २६७॥
दो० करि सिंगार नख सिखनि सब कूबरपीठ अछोट।
मनहुंधरी विधि बांधिकै खोटपने की मोट २६८॥
सवैया॥
लखिकै रिपु दौन अमौन तहां गहिकै सहि हाथ भाटै झटको। पदमारि सजोर अथोर बलीपटकी लहिरक्त कढ़ो टटको॥ गिरधारन देखिदशा अपनी फलसम्मति कोहियरे खटको। सटको मदकूबर टूटि गयो लखुफूटि गयो अघको मटको २६९॥
दो० करि विचार सानुज भरत संगपुरजन गुरुमातु॥
चले मनावन रामको त्यागिराज अवदात २७०॥
रोलाछन्द॥
सदल आये गंगतट गुहमिल्यो भेटलिवाइ। जहां सोये रामसो थल लखि रहे सुर भाइ॥ उतरि सुरसरि तीर्थ पति गये जहां भारद्वाज। गुहमन मुनिभरत गुणि जेवनार दीन समाज २७१॥ रहे जेते भरत संग नरनारि खगमृग जाति। सबन कहुं संतुष्ट कीनो असनदै बहुभांति॥ रच्यो राज समाज सह नृप भुवन को ग्रहचारु। रिद्धि सिधि नवनिद्धि ठाढ़ीं जोरि कर मुनिद्वारु २७२॥
इन्द्रवज्रा छन्द॥
लेके विदा बंधु समेत भाये। सेनासजे चित्र पहार आये॥ सो दूरसों लक्ष्मण सैन देखी। बोले भरे कोपन भ्रातु लेखी २३॥
सवैया॥
आवत संग लिये चतुरङ्ग उमंगतें सानुजबैठिकै रत्थहिं चाहतहो अनरत्थमहा अपने बसजानि पिता दशरत्थहिं॥ होंगलगारि कहौं सुनियो सब उद्यम दुष्टको होत विर-

त्यहिं। राम सपत्थ करैंधनुहत्थलै भेजत प्रेतके पत्थ भरत्यहिं २७४॥
दो० भरत पियादे आइतब परे रामके पाय।
प्रेम सहित रघुवंशमणि अनुजलियो उरलाय २७५॥
चौपाई॥
कहि न जाति भाइन की प्रीति। धन्य कहहिं मुनिगण लखि रीति॥ गुरुपदबंदि मातुपद बंदे। पुरजन राम देखि आनंदे २७६॥ जनक मरण सुनि अति पछिताने। नंदी न्हाइ जल दीन सयाने॥ बैठे बहुरि आइ रघुराई। गुरु समेत सन्मुख सब भाई २७७॥ तेहि क्षण भरत कह्यो करजोरि। चलिये राम विनय सुनिमोरि॥ क्षमिय कैकई को अपराधु। दुष्ट दोष देखहिं नहिं साधु २७८॥ सुनि रघुनाथ कहत गत रोष। तात जननि कहं देहु न दोष॥ विधिनै लिखी करम मैं जोइ। कोटि यतन कीजै सोइ होइ २७९॥ तातें पिता वचन परिमान। हम आये बन सुनहु सुजान॥ राज करहु तुम चौदह वर्ष। यामें कछुक नहीं दुख हर्ष २८०॥ सुनि परिपांइ भरत कह ऐसे। गिरि शिर धरै बालखग कैसे॥ नाथ जनक तिय बस परि जाहीं। करियै प्रथम विचार जु रहा २८१॥ इहि बिधि भरतअनुज सहबरनी। समुझायो पुनि दशरथ घरनी॥ गुरु बहुनीति रीति परकाशी। चलियै पुरहिं कह्यो पुरवासी २८२॥
दो० दृढ़व्रत राम नहीं सुनी समुझायो परवीन।
देखि अनुजगति पादुकहि राघवाजह्नितदीन२८३॥
सो० लैतेहि सिरपधराइ मुनिकोभेष बनाइकै।
नंदिग्रामनहं आइरहे राजरखि पादुकहि २८४॥
मौक्तिकदाम छन्द॥
उहां रघुनाथ महा अभिराम। गयेमुनि अत्रिबसैं जेहि ठाम॥ प्रणामकियो ऋषि दीन्हिअशीष। नियोसुत भूतल कोटिबरीश २८५॥ सिया मुनि नारिहि बंदिसनैन। कही

बर आशिषआनन्द ऐन ॥ रमेशहि पूजतभे मुनिराइ। चले तहंसों पुनि आयसुपाइ २८६ ॥ मिल्यो मग में इक दुष्ट विराधु। हत्यो तेहि राघव जानि असाधु ॥ मिले सरभंग महा अनुरागी। हृदय धरिध्यान दह्यौतन आगी २८७ ॥ महामुनि की गति यों लखि राम। चले मन मोदि महा बलधाम ॥ मरेमुनि अस्थिन देखि प्रवीन। हतों सबरच्छस यों प्रणकीन २८८ ॥ गये पुनि आपु सुतीच्छण धाम। कियो मुनिने उठि दण्डप्रणाम ॥ मिले मुनिसों बरबुद्धि निवास। गये तिनकेसंग कुम्भजपास २८९ ॥ अगस्त सुन्यो इत आवत राम। उठेसंग विप्रनले अभिराम ॥ गयेजहं राम रहेछबि छाय। हिंलैलखि रामपरेबढ़िपाय २९० ॥ लियो उरलाइ मुनीशप्रवीन। घनेबनके फलभोजनदीन ॥ दयो मुनिरामहिं केशव चाप। कथाकहिकै धनुकी सब आप २९१ निशाचर मारणकों धनुएक। दिया बरनू अपने कर लेक ॥ परे मुनि पायधरे धनु हाथ। गये पुनि पंचबटी रघुनाथ २९२ ॥

दो० तहंजटायु दशरथ सखा तिनसों भयो मिलाप।
परनकुटी रचिकैरहे लषण सियासह आप २९३ ॥
तहंभगिनी दशशीश की सूपनखा विकराल।
आइकह्यौ रघुनाथसों ब्याहकरौ ममहाल २९४ ॥

चौपाई ॥

मोहि तिय अहै कह्यो नरनाह। कहहु लषण सों करैं विवाह ॥ सुनि सो गई तहां भरि चाह। लच्छण कहत नीतिमहि राह २९५॥ दासीहोइ दास संगब्याहि। तातें भजु रामहिं दुखदाहि ॥ सुनिसो सिय भच्छण जियआनी। गई रामदिशि अमरष सानी २९६ ॥

सो० सैनकह्यौ भगवान लषण बोलाई पासतव।
काटेउकाढ़िकृपाण काननाक गिरिशिखरसम २९७ ॥

मल्लिकछन्द ॥

औरऊ भई कराल ॥ राच्छसी महा विशाल ॥ सो खरै समस्तगात। रोयकै कही उदात २९८॥ कोप पूरिकै रिसेश।

सैनको दियो निदेश। आपुही सजायसाज। सो चलत युद्ध काज२९९॥ रामबंधुकों बुझाइ। कंदरा दियो पठाइ। जानकी समेत जाइ। मोतहां रहैसचाइ ३००॥ लंकबांधिवी प्रवीन। राम चाप सज्ज कीन ॥ राक्षसोश सैनआइ। आवती भई प्रगट्ट ३०१॥

दो॰ खर दूषन चिशिरा लिये सहस चतुरदश बीर।
तामें चौदह अधमहीं हने मारिवी तीर ३०२॥

शारदूलविक्रीडित छन्द॥

मास्यौ दूषनकौं प्रचण्ड शरसों सोआशुहीं भूपरो। त्यों मास्यौ चिशिराहि तीनशरसौं सोऊ तुरतैमरो॥ ऐसेमारि समस्तदुष्टपलमैं लैबन्धुसेसरै। कीनेप्राणबिना मुरानरिपि लैनैरित्यसो करै ३०३॥ बाणीव्योममहिं दुंदुभीनिरखिसो भाईमिलेआइकै। दौरी सूपनखा कही दशमुखै बातैं सबै जाइकै॥ सीताशोभित चेतकाम बसह्वै मारीचपै सो गयो। रामै तू छलु मैं हरौं जनकजा सांचे विचारै ठयो ३०४॥

दो॰ समुझायो मारीच तेहि नहिं मान्यो खलकाज।
तबकञ्चन मृगहोय सोगयो जहां नरपाल ३०५॥

वसन्ततिलका॥

सीता निहारि मृगकोंमनमैं लुभानी। मारीचमैं बनचरै अबदेंकुआनी॥ सोजानि आपु लितबंधुहि सौंपिज्ञानी। धाये कुरङ्ग संगह्वै शरचापपानी३०६॥ मारीच दूरलखि आरतयों पुकास्यौ। हेबंधु हेलषणमैं अवजात मास्यौ॥ यौंटेरि राम शरसोंभिदि प्राणत्यागो। धास्यौ शरीर अपनो जब बाण लागो ३०७॥ सीतासुनी अतिहि संशय चित्त छायो। नारी सुभाव भट देवर कों पठायो॥ केती कही लषण पैं नहिं चित्त आई। श्रीराम पैं चलत से तब राम आई ३०८॥

दो॰ इत रावण द्विजरूप धरि सियपैं आतुरआइ।
कहोदेऊ मोहिं भीखदुमतियलंपट छलछाइ ३०९॥

चौपाई॥

बांतबात निजनाम बताइ। चलोतुरत खलसुरथचढ़ाइ॥

रोवतिसीय कछुनबसाई। सुनिसहाय आय खगराई ३१०। निजबल करि रथतोरि महाबल। काटे भुज शिर सहित तिहीथल॥ काढ़ि खड्ग रावण बलछायो। पक्षतुखंड करि भूमिगिरायो ३११॥ ताहिजीति सीतहिलै धायो। ऋष्यमूकगिरि ऊपर आयो॥ तहं कपिदेखि बसन सिय डारे। कह्यौरोय हानाथ हमारे ३१२॥

दो० लंकाविपिन अशोकमैं राखी सीताजाइ।
धर्मनत्यागेउ जानकी दुष्टपक्षौ समुझाइ ३१३॥

चौपाई॥

मिले राम लक्ष्मणसों जबहीं। सियत्यागी किमि पूछेउ तबहीं॥ लक्ष्मण कही कथा शुभऐन। कहे सिया जो अनुचितबैन ३१४॥ तबरघुबर निजकुटी निहारी। सियारहित अतिही दुखकारी॥ परम विलाप कियो रघुराई। खोजत बन कित मैथिलजाई ३१५॥ नरलीला अतिहीदरसाई। बहु प्रकार समुझायो भाई॥ आगेंजाइ जटायु निहारो। परो अल्पअसुनिशचिर मारो ३१६॥ तिन सबकथाकही मतिमान। तजि तनगयो विष्णु अस्थान॥ तासुक्रिया करि सहित विधान। चलेसियहि खोजत भगवान ३१७॥ मगनिशिचरी दरी मह जोही। काटी नाक शक्तिजित द्रोही॥ पुनिकबन्ध देखेउ अति भारी। काटेउ ताभुज खड्ग निकारी ३१८॥ पूरबरह्यौतैान गन्धर्व। आपुनि कथा कही तिनसर्व॥ निज स्वरूपधरिकरि परणाम। कपिपतिकहं बताइ गो धाम ३१९॥ बहुरि चले रघुबर छबिछाये। शबरीके आश्रमप्रभु आये॥ ताके फल भोजन करि राम। दीनीगति मुनि सम अभिराम ३२०॥ सो मतंग को शिष्य अनूप। राम परसि भइ ब्रह्मस्वरूप॥ तहं सोंहरि पंपासरआये। लखि तेहि शोक भये मुरझाये ३२१॥

दो० अतिबिलाप करते भये सीताहित रघुनाथ।
हा स्वगलोचनि सुन्दरी कितहिंगई तजिसाथ ३२२॥

उपेंद्रवज्रा छन्द ॥

निहारि सुग्रीव पहाड़पैतें । हनूमतै दीन्ह पठाइ भैतें ॥ बनाइकै विप्रस्वरूप रूरो । गयो जहां पूछन बुद्धिपूरो ३२३॥ नरेशहोकै अमरेश कोऊ । फिरौबनै क्यों मुनिरूप दोऊ ॥ कह्यौ तबै राम कथा अपानी । पर्यो पदै कोश रमेश जानी ३२४॥ बहोरि सुग्रीव कथा सुनाई । गयेतहां राम समेत भाई ॥ सुरेशको पुत्र निहारि रामैं । उठ्योधरे प्रेम कह्यौ प्रणामैं ३२५ ॥

इन्द्रवज्रा छन्द ॥

भेंटे दोऊ जोरि सुमित्रताई । साखीकरी पावक मध्य नाई ॥ सीताकथा राम तिन्हैसुनाई । बाली कथा बानर राजगाई ३२६ ॥ डारे सिया भूषण चीरजोई । रामैं दियो लाइ सुकंठ सोई ॥ भाषी कथा या विधि ताहि पायो । सोचाहिकै राम गरे लगायो ३२७ ॥ बाली बधौं यों प्रण राम कीनो । चालो लरै मित्र निदेश दीनो ॥ सन्देह पूरू कपिराज भाई । भारीकथा दुंदुभि की सुनाई ३२८ ॥

दो० अतिबल बालिहितौ बधऊ जौंबेधऊ यहसाल ।
सुनि प्रभु भेदे सातऊ इकशरसों तेहिकाल ३२९ ॥

चौपाई ॥

तब प्रतीत कपिपति कहं आई । किसकिंधा गयो संग रघुराई ॥ राम रहेठाढ़े तरुओट । टेर्यो बंधुहि कपिपति छोट ३३० ॥ सुनि गर्जना चल्यो बलवाना । तारा बहुत कहानहिंमाना ॥ आइ युद्धकरि कछुक न चूको । अनुजहि हनो बज्र समभूको ३३१ ॥ सो सहिप्राण राखिबे हेत । मुक्त भगो ऋषिमूक निकेत ॥ मित्रहि लखि आगत भ्रम छाये । रामऊ पुनि सोईथल आये ३३२ ॥

भुजंगछन्द ॥

कह्यो रामसों मैं कह्यौ सोनमानी बधै बालि कों वीर ऐसोन कोऊ । इहां विप्रके शाप सों सोन आवै बचै प्राण मेरो सुनो भागसोऊ ॥ कह्यौ रामसो एकसे दोयभाई न

चीन्हौं अबै मारिहौं मो कराला। दई भाषियों चहिवेहेत सूमीश सुग्रीव के ग्रीवमैं फूलमाला ३३३॥ गये बंधु द्वारै तबै कीश आलो महातालै दीनो महावीर्यशाली। सुन्यों तौन बाली चल्यौ कोपि ज्वाली बलीधीर धारी महा हेममाली॥ भिरे वीरदोऊ कहैकौन शोभा मनो दोय मेरु लरैं कोप पूरे। धरती सबै कांपती पैरमारै करैं दावघातैं घनी भांति रूरे ३३४॥

दो० आगत शुनि सुग्रीव कहं बालिहि एकैबाब।
महिपतिमारे महिगिरो पविहतशैलसमान ३३५॥

चैापाई॥

सनमुख तबहिं गये दोउभाई। बोलो निरखि कीशको राई॥ तुम छलकरि मममारेउ मोहीं। धर्मनिधान सांचि मतिसोहीं ३३६॥ जोसन्मुख मोहिमारत आई। तौ रण रसमिल तो रघुराई॥ हमजानो रावण वधकाज। भे सुग्रीव सखा नरराज ३३७॥

दो० जौंहमसों कहते प्रथम तौहम तुमरेहेत।
रावणकहंलै साम्हने राखत लङ्कसमेत ३३८॥
सुतहेत तुमज्ञान बधिसेयो चैगुणकर्म।
तिमिजबहितबधिबालिकहं रख्योसुकंठअमर्म३३९॥

चैापाई॥

रामकहापापी संगकीने। होत अघी सहायहु लीने॥ तूसठहरीअनुजकीनारि। हमन्टप दीनोदण्ड विचारि३४०॥ इतनेमहं आईतहं तारा। लागी करण बिलाप अपारा॥ अंगदादि वानर सब आये। लखिकै दशा अतिहि बिलखाये ३१४॥ अंगद कहं सौंप्यो रघुराइहि। बहुत नीति समुझाई भाइहि॥ तारासोंकहि भजहु रमेश। बालिगयो सुरनायक देश ३४२॥ मरे कपीश तहां तेहिबार। भयो भयंकर हाहाकार॥ रोवतअतिहि बिकल सुग्रीव। हाममबंधु महाबल सींव ३४३॥ तब रघुपति तारा समुझाई। बहुत नीति स्रुति रीति बताई॥ अंगद सुग्रीवादिप्रबोधि